www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

हमारे पूर्वज

लखते न अघ की ओर थे वे, अघ न लखता था उन्हें,
वे धर्म को रखते सदा थे, धर्म रखता था उन्हें,
वे कर्म से ही कर्म का थे नाश करना जानते,
करते वही थे वे जिसे कर्तव्य थे वे मानते।

–मैथिलीशरण गुप्त

यह अंक दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक दयानन्द भारतीय पब्लिक स्कूल, जोगिन्द्रनगर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ७३वां विक्रमी सम्वत् २०७० सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११४ नवम्बर २०१३

www.thearyasamaj.org

मठ–एक नज़र में

अपने महिमा में अनुभूतियों को सजा रही थी।
वैदिक पताकायें शोभा यात्रा पर फहरा रही थीं,
सभी आर्यजनों को हर्षा रही थी।
देखा हीरक जयन्ती का अद्भुत नज़ारा,
दिव्य आनन्द में था दयानन्द मठ सारा,
स्वतन्त्रानन्द महान् की यह तपस्थली प्यारी
देख इसे हर्षित थे सभी नर–नारी
रामचन्द्र को शिष्य बनाकर किया अद्भुत काम
स्वामी सर्वानन्द बनकर चमकाया मठ का नाम
एक सौ पांच साल की आयु तक
की मठ की सेवा भारी
उन्हीं की सेवा तपस्या से महकी
आज मठ की फुलवाड़ी
उन्होंने बनाया सदानन्द जी को मठ का अधिकारी
हीरक जयन्ती दीननगर में
आर्यजनों ने धूमधाम से मनाई
इसे देखने कोने–कोने से
आर्यजनों की भीड़ उमड़ आई,
मठ में सभी ब्रह्मचारी मिलजुल कर हैं रहते,
करते हैं सब कार्य गुरुजन हैं जो उन्हें कहते।
साधु सन्यासियों की उपस्थिति थी मठ में भारी
सभी प्रबन्ध पूरे थे,
सभी प्रकार की थी मठ में तैयारी।

नब्बे वर्षीय एम. डी. एच. मसाले वाले
धर्मपाल जी ने पुकारा
है देव दयानन्द की शिक्षाओं का
आज मानवता को सहारा,
मठ हेतु उन्होंने पांच लाख से अधिक धनराशि दी
धर्मपाल के सहयोग से बढ़ी मठ की शान भी
सभी आर्यजनों ने यथा शक्ति मठ का सहयोग किया
आर्यों का प्रेम देख स्वामी सदानन्द ने आनन्द लिया
१६ अक्तूबर को मठ की शोभा यात्रा थी अति न्यारी
दीनानगर के बाजार में आर्यजनों की उपस्थिति थी भारी
दीनानगर वासियों ने सुन्दर शोभा यात्रा का आनन्द लिया
सभी उपस्थित जनों ने
स्वामी सदानन्द का धन्यवाद किया।
वैदिक पुस्तकों के स्टाल लगे थे हृदयहारी,
आर्यजन वैदिक साहित्य पुस्तकें खरीद रहे थे,
मठ पर थे बलिहारी,
सुविधा, सुव्यवस्था में रहा स्वामी सदानन्द का हाथ
मठ के सभी ब्रह्मचारी थे उनके साथ
आर्यजन बीस दोपहर घरों को जाने लगे
गीत स्वतन्त्रतानन्द और सर्वानन्द जी के गाने लगे,
हीरक जयन्ती से हुई मठ की शोभा भारी
सदानन्द की जय कर रहे थे नर–नारी।

–सम्पादक

मुख्य संरक्षक	:	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मो. : 94180–12871
संरक्षक	:	रोशन लाल बहल, पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मो. : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	:	सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 01733.220060
परामर्शदाता	:	रत्न लाल वैद्य, उप–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मो. : 94184–60332
विधि सलाहकार	:	प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), आर्य समाज–कण्डाघाट मो. : 94180–20633
सम्पादक	:	कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मो. : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	:	विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मो. : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	:	1. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मो. : 94591–05378 2. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मो. : 98161–25501
सह–सम्पादक	:	राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
कोषाध्यक्ष	:	मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	:	प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	:	लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, उपकार्यालय मण्डी से प्रकाशित किया।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

११, १२ अक्तूबर २०१३ को आये महान् विनाशकारी चक्रवाती तुफान ने विश्व का ध्यान भारतवर्ष के इस प्रलयकारी विनाशकारी तूफान की ओर लगा दिया था। भारत के वैज्ञानिक इस देश की सेना तथा सरकार बधाई के पात्र हैं। जिन्होंने समय रहते इस महान विनाशकारी और प्रलयंकारी आपदा से दो–दो हाथ करने की पूरी तैयारी कर ली थी। उड़ीसा में नौ लाख तथा आन्ध्र प्रदेश में पांच लाख लोगों को सरकार, सेना और स्वयं सेवकों द्वारा सुरक्षित स्थानों की ओर बचाव शिविरों में भेज दिया था। केन्द्र सरकार और प्रदेशों की राज्य सरकारें बधाई की पात्र है जिन्होंने बिना समय नष्ट किये इस विनाश का मुकाबला करने में कोई भी कसर बाकी नहीं रखी। इस दिशा में की जाने वाली कोई भी लापरवाही अन्यथा इन राज्यों की तटीय जनता को लाखों की संख्या में समुद्र में मच्छलियों के लिये सदा और सर्वदा के लिये सौंप देती। इस त्रासदी से बचाव करने के लिये विश्व के देशों ने भी भारत की सराहना की है।

सभी लोग अपने–अपने घरों को सकुशल भेज दिये गये हैं। साढ़े तीन फुट के ऊपर आये इस तटीय तूफान ने अरबों रुपयों की हानि कर दी। समुद्र के खारे पानी से कृषि योग्य भूमि पर आ जाने से उन खेतों की खेती भी आगामी कई सालों तक समाप्त हो गई। जान–माल की रक्षा समय रहते वैज्ञानिकों द्वारा इस विनाश की सूचना दे दिये जाने से सम्भव हो सकी। विज्ञान जगत् में की जा रही इन सुविधाओं के लिये विश्व की जनता वैज्ञानिकों का उनके अनुसन्धानों हेतु ह्रदय से साधुवाद करती है। आज वैज्ञानिकों द्वारा मोबाइल आदि की सुविधा मनुष्य को दी गई है। हम हिमाचल प्रदेश के पूर्व केन्द्रीय मन्त्री सुखराम के आभारी हैं जिनकी कृपा कुशलता और कार्यदक्षता से इस प्रदेश में दूरसंचार क्रांति सम्भव हो सकी है। लेकिन विज्ञान जगत् की उपलब्धियों का एक धूँधला और नकारात्मक पक्ष भी है जिसकी ओर विश्व के समस्त लोगों को ध्यान देने की तुरन्त आवश्यकता है। आज वैज्ञानिकों से अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाकर ऐसे–ऐसे आणविक और रसायनिक हथियारों का निर्माण कर दिया है जिसमें केवल बटन के दबाने मात्र से देखते ही देखते तथा आंख झपकने मात्र से ईश्वर की इस सृष्टि की समाप्ति हो सकती है। चन्द्रलोक, मंगल ग्रह और ब्रह्मांड़ के ग्रहों, उपग्रहों के रहस्यों को खोलने वाला वैज्ञानिक यदि आज न सम्भला तो किसी भी समय मकड़ी की जाल की तरह न केवल अपने आपको अपितु समस्त संसार और मानवजाति को मृत्यु के हाथों से बचाने पर भी नहीं बचा पायेगा। किसी ने संसार के एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक से प्रश्न किया था कि चौथा विश्व युद्ध किन–किन हथियारों से लड़ा जायेगा ? वैज्ञानिक महोदय ने उत्तर दिया था चौथे विश्व युद्ध के सम्बन्ध में मैं नहीं जानता लेकिन उससे अगला विश्व युद्ध पत्थरों से लड़ा जायेगा। अब समय से पूर्व हमें सोच समझ लेना चाहिये कि वर्तमान युग में मानव विनाश के ढेर पर बैठा है। न मालूम कब किस देश का दिल और दिमाग उसे उस बटन को दवाने का क्रूरतापूर्ण साहस करे और मानव की समस्त उपलब्धियों का विनाश हो जाये। वर्तमान युग में साधु, संत पीर, मौला और पादरी भी जनता को भ्रातृभाव की ओर झुका पाने में पूर्ण रूप से असमर्थ दिखलाई दे रहे हैं। प्राचीन समय में ऋषि–मुनि कन्दराओं में बैठ कर प्यारे प्रियतम का गुणगान किया करते थे। आधुनिक युग के साधु–संत–मंहत–पीर, फकीर करोड़ों रुपयों के आश्रमों में विराजते है। जिसका नाम उन्होंने कुटिया रखा हैं। बाहर से कुटिया और भीतर से रनवास। अब सहज में अनुमान लाया जा सकता है कि हम कितने भटक गये हैं ? कौन, कैसे इन नैतिक मूल्यों को जो पतन की पराकाष्ठा तक पहुँच गये है–सम्भाल करेगा। मेरा मतलब सभी साधु महात्माओं, पीर और फकीरों से नहीं है। समाज को स्वस्थ सोच देने में पर हित चाहने वालों की अपनी विशेष भूमिका है। आज रासांयनिक हथियारों के सीरिया के राष्ट्रपति द्वारा किये प्रयोगों से दुःखी होकर अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने इस राष्ट्र पर वायु मार्ग से हमला करने की चेतावनी दे दी थी। मारे गये बच्चों के सिरों के बालों के नमूनों से यह सिद्ध हो गया कि यहाँ रासायनिक हथियारों का प्रयोग हुआ है। रूस के प्रधानमंत्री और अमेरिका सरकार में वार्ता के सफल होने पर सीरिया अपने रासायनिक हथियारों की विश्व द्वारा जांच कराने में सहमत हो गया। सीरिया के आकाश से युद्ध के बादल छंट गये। मानवता का विनाश और सर्वनाश होने से बच गया। यह बात विश्व के नेताओं के दिल और दिमाग में पुनः प्रवेश कर गई कि बड़ी समस्याओं का समाधान वार्तालाप से ही सम्भव है।

भारत के ऋषि–मुनियों ने विश्व को सर्वे भवन्तुः सुखिनः का बीज मंत्र दिया है। यही मन्त्र अशांति के ताण्डव साम्राज्य में प्रेम, अंहिसा और भातृभाव के लाल–लाल गुलाब के फूलों की सुगन्ध बिखेर सकता है। मानवता की फुलबाड़ी को शमशान बनने से बचा सकता है। आज के नेताओं को अपना ध्यान लड़ाई के स्थान पर प्रेम–मिलन पर अधिक लगाना चाहिये। ये नेता भी समझते हैं कि वर्तमान युग में यदि कहीं पतन की नीति का अनुकरण और अनुसरण किया गया तो विश्व रंगमंच से न केवल मानव जाति अपितु जल चर, स्थल चर और नभ चर सभी प्रकार के प्राणीमात्र का

www.thearyasamaj.org

सफाया हो जायेगा। नये ढंग से पुनः पाषाण युग में मानवता को प्रवेश करना होगा। प्रसाद जी की कामायनी में श्रद्धा द्वारा मनु को कहे शब्दों में कितना सार है :–

'सबको हंसता देखो मनु हंसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत करके सबको सुखी बनाओ।'

बुद्धि के द्वारा विश्व में मानव ने कमाल के कार्य कर दिखाये हैं। लाखों व्यक्तियों के जीवन की रक्षा चक्रवाती तूफान की वैज्ञानिकों द्वारा दी गई पूर्व सूचना से सम्भव हो सकी। आज विश्व में बुद्धि को सुमार्ग पर ले जाने और कुमार्ग से बचा रखने की अति आवश्यकता है। पृथ्वी पर तभी धर्म की रक्षा सम्भव है जब मानव के मन और मस्तिष्क में प्रेम शान्ति, अहिंसा और करूणा की तरंगे हिलोरें लेती रहती हों। राम भक्त कवि श्री तुलसी दास धर्म की व्याख्या में कहते हैं : ''परहित सरस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।'' मन, वचन और कर्म से दूसरों का हित चाहना ही सबसे बड़ा धर्म और अहित चाहना या करना ही सबसे बड़ा अधर्म है। वास्तव में कवि के शब्दों में मनुष्य ही मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र और मनुष्य ही अपना सबसे बड़ा शत्रु है। वे कहते हैं :–

'रावण रावण को हन्यो, दोष राम को नाहि,
हित अनहित निज देखिये, तुलसी आप ही माहिं'

अर्थात् रावण की मृत्यु का कारण स्वयं रावण के कुकर्म ही थे, इसमें मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का हाथ मात्र भी नहीं था। धन, बल और बाहु बल ने उसे इस हद तक पहुंचा दिया कि एक महान् तपस्वी की धर्मपत्नी को अपनी पटरानी बनाने की कुचेष्ठा कर बैठा और धन धान्य से सम्पन्न स्वर्णिम लंका को परिवार सहित शमशान भूमि में परवर्तित कर बैठा। युद्ध भूमि में चारों ओर लाशों के ढेर ही ढेर हैं। बुद्धि को सार्थक और शील कार्य करवाने के लिये कदम–कदम पर वेदों में गायत्री मन्त्र में प्रार्थना की है कि वह परम पिता परमेश्वर हमेशा हमारी बुद्धियों को सुमार्ग की ओर प्रेरित करें। तभी मानव दानव बनने से बचा रह सकता है। युद्ध के खतरों का डर तभी ध्वस्त हो सकता है। अतः ''चरैवेति–चरैवेति'' की शिक्षा का हम पालन करें और पृथ्वी की मानवता और प्राणीमात्र की इस सुन्दर और सुखद फुलवाड़ी का नाश होने से बचाने और अपने जीवन का सुकार्यों की खेती में लगाये और पुण्य की फसल कमायें और प्रभु के प्रिय पुत्र और पुत्रियाँ कहलायें। कवि महोदय ने ठीक ही कहा है :

करना है जो काम उसी में चित लगा दो,
आत्मा पर विश्वास करो सन्देह भगा दो।
पूर्ण तुम्हारा मनोरथ अगर अभी न होगा,
होगा तो बस अभी नहीं तो कभी न होगा।

–कृष्ण चन्द आर्य

''एक दिव्य समारोह''

हीरक जयन्ती समारोह दयानन्द मठ दीनानगर में १८ अक्तूबर से २० अक्तूबर, १३ तक धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मठ प्रांगण में मनाया गया। आज से ७५ साल से पूर्व आर्य जगत के सुप्रसिद्ध सन्यासी और महान स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने इस मठ का गुरुवर कार्यभार संभाला था। उनके सुयोग्य शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने १०५ साल की आयु में दीन–दुःखियों और दलितों तथा बेसहारों का सहारा बनकर लोगों का मन, मन्दिर में अपने सेवा के द्वारा विशेष स्थान अर्जित किया था। स्वामी सर्वानन्द जी को सुयोग्य शिष्य स्वामी सदानन्द जी ने स्वामी स्वतन्त्रतानन्द और अपने गुरू स्वामी सर्वानन्द जी की हीरक जयन्ती मनाने। भारतवर्ष के कोने–कोने से साधु–महात्मा और आर्यजन उपस्थित थे। संगीत, सम्मेलन, वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन आदि का सफल आयोजन हुआ। सम्मेलन के मंच संचालक राजस्थान के आर्य स्वामी सुमेधानन्द जी थे। इस सम्मेलन में ६० वर्षीय एम. डी. एच. मसालों के जनक महाशय धर्मपाल जी, गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान हैं, पधारे थे। गुरुकुल कांगड़ी जो ८ करोड़ के घाटे में चल रही थी की विशेष स्थिति ठीक करने हेतु महाशय धर्मदास जी ने दो करोड़ रुपये दान रूप में दिये। उन्होंने हीरक जयन्ती के शुभारम्भ पर पांच लाख पांच हजार पांच सौ पचपन रुपये की राशि अपनी ओर से हीरक जयन्ती के शुभावसर पर मठ को करतल ध्वनि के मध्य दान देने की घोषणा की। इस मठ के जनक स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के भतीजे और पोते ने भी भाग लिया। घण्डरा मठ के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द जी मठ के इस पावन महोत्सव पर ब्रह्मचारियों सहित पधारे थे। स्वामी सदानन्द जी महाराज ने जिस ढंग से महान स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द और उनके शिष्य और अपने गुरु स्वामी सदानन्द जी की वाटिका को जिस उत्साह के साथ सजाया, संबारा और सुन्दर बनाया है उसके लिये स्वामी जी महाराज साधुवाद के पात्र हैं। यज्ञशाला के ऊपरी भाग में महर्षि स्वामी दयानन्द की जीवन की गाथा चित्रों में संग्रहित की गई है जो अति गौरवमयी और मनोहारी है। आर्यजनों ने इस संग्रह स्थली के दर्शन करके भरपूर आनन्द प्राप्त किया। दयानन्द मठ दीनानगर को स्वामी सर्वानन्द जी के सुयोग्य शिष्य स्वामी सदानन्द जी ने चार चाँद लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मठ की प्रगति के इतिहास में उनकी अनुपम और अनूठी देन रहेगी। मठ के इतिहास में यदि स्वामी स्वतन्त्रानन्द सूर्य और सर्वानन्द जी चांद हैं तो स्वामी सदानन्द जी को ध्रुव तारे के रूप में याद किया जायेगा।

–सम्पादक

www.thearyasamaj.org

"लिव इन रिलेशनशिप"

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

मार्च २०१० में भारतीय उच्चतम न्यायालय ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया है–"बिना विवाह किए भी भारत में कोई भी युवक व युवती अथवा पुरुष व स्त्री इकट्ठे रह सकते हैं। यदि कृष्ण व राधा बिना परस्पर विवाह किए एकत्र रह सकते थे तो आज के युवक–युवती/पुरुष–स्त्री ऐसा क्यों नहीं कर सकते ?"

यह निर्णय महत्त्वपूर्ण ही नहीं, भयंकर व अत्यन्त हानिकारक भी है। इसका परिणाम यह निकलेगा कि आप की गली में कोई पुरुष व स्त्री बिना विवाह किए आकर रहने लगेंगे, तो आप व आपकी गली में रहने वाले अन्य लोगों को उनका वहाँ रहना अत्यन्त बुरा, समाज व परिवार को दूषित करने वाला प्रतीत होगा, परन्तु आप उनका कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे। यदि आप कुछ पड़ौसियों को साथ लेकर उनके पास जाकर गली छोड़कर चले जाने को कहेंगे, तो वे उपरोक्त निर्णय दिखाएँगे व आप असफल होकर घर वापस लौट आएँगे। यदि आपके द्वारा पुलिस में उनकी शिकायत की जाएगी व पुलिस स्वयं आकर समाज, धर्म व कानून के विरुद्ध ऐसा कार्य करने के अपराध में उनसे पूछताछ करेगी, तो उसे भी वे उच्चतम न्यायालय का पूर्वोक्त निर्णय दिखाएँगे तथा पुलिस भी उनके विरुद्ध केस बनाए बिना, वापस लौटने के सिवाए अन्य कुछ नहीं कर पाएगी।

मैंने यह घटना पूर्वोक्त रूप में कुछ स्थानों पर कुछ लोगों को सुनाई है, तो लगभग सभी श्रोताओं ने यही कहा है, कि न्यायालय को भ्रष्ट करने व परिवारों की एकता को भंग करने के द्वार खोल दिए हैं, परन्तु मेरे विचार में न्यायालय का इस निर्णय में कोई दोष नहीं है, क्योंकि न्यायपालिका का काम निर्णय देना है तथा वह निर्णय देती है–विधायिका द्वारा बनाए हुए अधिनियमों के आधार पर। विधायिका द्वारा बनाए गए अधिनियमों में लिखे एक–एक शब्द के गहन, पूर्ण व सत्य अर्थों पर विचार करके ही न्यायाधीश निर्णय दे सकते हैं। उनके निजी विचार कुछ भी क्यों न हों, वे अधिनियम के बन्धन में अक्षरशः बन्धे होते हैं। इस सम्बन्ध में मैं प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ।

इंग्लैण्ड में एक समय में ऐसा कानून बनाया गया था कि लंदन की सड़कों पर कोई घोड़ा–गाड़ी नहीं लाई जाएगी और यदि कोई ऐसा करेगा तो उसे दण्डित किया जाएगा। कुछ दिनों तक इस अधिनियम का पालन होता रहा परन्तु एक दिन लोगों ने देखा कि एक गाड़ी लंदन में चल रही थी। चालक को वहाँ की पुलिस ने न्यायालय में प्रस्तुत किया, परन्तु न्यायाधीश उसे कोई दण्ड न दे पाए, क्योंकि चालक ने यह सिद्ध कर दिया कि वह जो गाड़ी लेकर लंदन में घूम रहा था, वह घोड़ा–गाड़ी थी ही नहीं, अपितु घोड़ी–गाड़ी थी। इसी प्रकार एक दूसरी घटना भी लिखता हूँ –अंग्रेजों के शासन काल की भारत की यह घटना है। तब तक एक न्यायालय में चल रहे मुकद्दमे में फांसी पर लटका देने का दण्ड एक अपराधी को न्यायाधीश ने देते हुए लिखा–"He should be hanged." उस अपराधी को उसके वकील ने कहा कि तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा। कुछ लोगों का विचार है कि वह वकील जवाहर लाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू थे। वस्तुतः वही वकील थे, या कोई अन्य मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है। अस्तु। जब अपराधी को फांसी का फंदा डालकर लटकाया गया तो, अपराधी को तुरन्त छुड़वा लिया कि न्यायाधीश ने अपने आदेश में यह नहीं लिखा कि इसको तब तक लटकाए ही रखना है, जब तक इसके प्राण न निकल जाएँ। पास खड़े उच्चाधिकारी व कर्मचारियों को उस वकील ने फांसी पर लटकाने से पूर्व ही उक्त आदेश का अर्थ समझा व मनवा लिया था कि इसमें तो इतना ही लिखा है कि इस अपराधी को लटकाया जाए। इसमें यह कहाँ लिखा है कि इसे मरने तक लटकाए रखना है। अधिवक्ता ने अपराधी को छुड़ा लिया, बचा लिया। यह उसके द्वारा शब्दार्थ की गहराई तक जाने का परिणाम था। कुछ लोग कहते हैं कि इस घटना के पश्चात् ही तत्कालीन शासन ने ऐसी व्यवस्था की, कि न्यायाधीश ऐसे अपराधियों के मामले में निर्णय देते हुए लिखने लगे– "He should be hanged till death" अर्थात् इसे तब तक लटकाए रखा जाए, जब तक इसकी मृत्यु न हो जाए।

सन् २०१० में पूर्वोक्त मामले में न्यायाधीशों का कोई दोष नहीं है। इस कथन को पाठकों में से वे पाठक मेरी बात अच्छी प्रकार समझेंगे, जिनको न्यायालयों की न्यायविधि का ज्ञान है। दोष वस्तुतः उनका है जिन्होंने पुराणों में कृष्ण जी व राधा के सम्बन्धों को अश्लील चित्रित किया था। इसके अतिरिक्त उनका भी दोष है, जिन्होंने इनके सम्बन्धों को अश्लील रूप में प्रस्तुत करने वालों के हाथ न कटवाये, न पुराणों की हिन्दु समाज में मान्यता व प्रतिष्ठा है। न्यायालय में सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से पापी व दोषी युवक व उस युवती के वकील ने वे प्रसंग प्रस्तुत किए जिनसे कृष्ण जी व राधा के शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने का वर्णन है (ब्रह्म वैवर्त पुराण, श्री कृष्ण जन्म खण्ड, अ, ४६ व अ. १५) इसमें न्यायाधीशों का दोष क्या है ? सरकार की ओर से प्रस्तुत हुए अधिवक्ता भी पूर्वोक्त पुराण के प्रमाणों को झुठला नहीं सके।

www.thearyasamaj.org

पूरा हिन्दू समाज पुराणों को सत्य व ऐतिहासिक ग्रन्थ मानता है। आर्यसमाज बहुत पहले ही पुराणों को झुठला चुका है, व महर्षि दयानन्द ने कृष्ण जी के विषय में स्पष्ट लिखा है–देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा (स. प्र. एकादश समुल्लास)

महाखेद की बात है कि इस अनिष्टकारी निर्णय के आने के बाद ३ वर्षों में भी पूरे देश में कोई हलचल नहीं हुई। जगद्गुरु बने बैठे शंकराचार्यों में से एक ने भी इस निर्णय व इसमें राधा व कृष्ण जी के चरित्र को गलत रूप में न्यायालय द्वारा प्रमाण मानने से भविष्य में क्या दुष्परिणाम होंगे, इसकी कोई कल्पना व इसे रोकने हेतु कोई कार्यक्रम व इच्छा नहीं है। इसके अतिरिक्त कोई सन्त, कोई महन्त, कोई ठगन्त, कोई बापू, कोई गुरु, कोई संन्यासी, कोई मौलवी, किसी धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संस्था का कोई पदाधिकारी आजतक इस विषय में कुछ नहीं बोला। इससे सिद्ध है कि उनकी दृष्टि में यह निर्णय एक युवक व एक युवती तक ही सीमित रहेगा। मेरे विचार में यह एक दूरगामी, अनिष्टकारी निर्णय है, तथा इसके विरोध में केवल हिन्दुओं को ही नहीं, अपितु आर्यों, सिक्खों, मुसलमानों, जैनियों व बौद्धों, वनवासियों नास्तिकों व कम्युनिस्टों को भी एकत्र होकर आवाज उठानी चाहिए थी व सभी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व साम्प्रदायिक मतभेद भुलाकर इस विषय पर एकजुट होना चाहिए था। खेद है! हमारे देश में राजनैतिक सुख व भोग हेतु परस्पर विरोधी या भिन्न–भिन्न विचारों वाली २५–२६ पार्टियाँ एकत्रित होकर कथित न्यूनतम कार्यक्रम बना लेती हैं, परन्तु सामाजिक, धार्मिक संस्थाएं राजनैतिक दल व समाज हित को लेकर एक मुद्दे पर भी एकत्रित नहीं होते। मुझे इस विषय में यह निवेदन करना है।

बाग़बानों ने अगर अपनी रविश नहीं बदली,
तो पत्ता–पत्ता इस चमन का बाग़ी हो जाएगा।

१६ दिसम्बर को बलात्कार की दिल्ली में हुई दुर्घटना के बाद देश में प्रजा ने जो चेतना व विरोधभाव प्रकट किया, उससे सरकार हिल गई। इससे सिद्ध है कि राजनेता केवल जनता के दबाव के आगे ही झुकते हैं। पूर्वोक्त विषय में निष्क्रिय समाज व राष्ट्र की चिन्ता कौन करेगा ? आज हर कोई उच्छृंखल है। रही–सही कमी प्रस्तुत निर्णय के बाद होगी। न धर्मगुरुओं को, न समाजशास्त्रियों को, न धार्मिक संस्थाओं को उच्छृंखल हो रहे इस समाज व राष्ट्र की कोई चिन्ता है। जब ऐसा कानून कोई है ही नहीं जिसके अधीन ऐसा करने वाले स्त्री–पुरुष को अपराधी मानकर दण्ड दिया जा सके, तो न्यायालय उनको दण्ड दे ही कैसे सकता है ? उच्चतम न्यायालय का यह निर्णय आने के बाद किसी राजनैतिक दल की भी नींद नहीं खुली व इस निर्णय के पश्चात् Live in Relationship के नाम पर बिना विवाह किए रहने वालों की संख्या बढ़ने लगी है। अब उनको उच्चतम न्यायालय का निर्णय विशेष उत्साह प्रदान कर रहा है व उनका मनोबल ऐसे उच्छृंखलतापूर्ण कार्य करने को बढ़ाता ही जा रहा है। इस स्थिति में एक स्पष्ट कानून बनाने की तुरन्त आवश्यकता है, जिसके अधीन ऐसे सम्बन्ध को अवैध व कठोर दण्डनीय माना जाए। राधा व कृष्ण जी का कथित प्रसंग इसमें बाधा नहीं बनता।

सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थाओं, समाज शास्त्रियो ! जागो तथा इस सरकार पर तुरन्त दबाव डालो कि वह वाञ्छनीय कानून बनाए। सुख–सुविधाओं व धन–ऐश्वर्य में डूबे राजनैतिक नेताओ !! निद्रा त्यागो तथा देश के परम्परागत वैवाहिक आदर्श की रक्षार्थ तुरन्त वाञ्छनीय कानून बनाओ अन्यथा आने वाला इतिहास तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।

दे रही हों आंधियाँ जब द्वार पर दस्तक तुम्हारे,
तुम नहीं जगे तो यह सारा ज़माना क्या कहेगा ?
बहारों को खड़ा नीलाम देखा पतझड़ कर रहा है
तुम नहीं उठे तो यह आशियाना क्या कहेगा ?

लड़की होना पाप नहीं है

नौ दुर्गा नवरात्रों की दुर्गा माँ भी एक नारी है
तो जब लड़की का पैदा होना इतना मातम क्यों छा जाता है
खानदान की इज्जत और रौनक होती है लड़की
अब लड़की बोझ नहीं है वह भी हाथ बंटाती है
चाहे दहेज मांगने वालों को चाहे घर की गृहस्थी में
पढ़ लिखकर विद्वान् बनकर आगे बढ़ती है लड़की
जैसे एन. सी. सी में फायरिंग करती,
अन्तर्राष्ट्रीय खेलो में जाती
हर कदम पर आगे बढ़ती है लड़की,
नेहरू जी के था कब लड़का,
इंदिरा जी लड़की ही तो थी,
अपने दिल से पूछकर देखो, क्या इंदिरा किसी से कम थी ?
खानदान की रौनक लड़की
पर जब लड़की पैदा होती है, क्यों मातम सा छा जाता है ?
क्यों चेहरा कुम्हला जाता है ?
जो माताएं लड़की को जन्म देती हैं उनका सम्मान करो।
भारत में माताओं का नाम महान् करो।

–सरला गौड़, सचिव, आर्य समाज, खरीहड़ी, सुन्दरनगर

www.thearyasamaj.org

"हीरक जयन्ती समारोह"

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) में सन्त शिरोमणि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की द्वारा स्थापित मठ के ७५ वर्ष पूरे होने पर हरिक जयन्ती समारोह १८ से २० अक्तूबर, २०१३ धूमधाम और श्रद्धापूर्वक मठ परिसर में मनाया गया। पहले दिन इस समारोह का शुभारम्भ सूर्योदय उपरान्त ७ बजे हवन–यज्ञ के साथ हुआ। समस्त आगन्तुकों ने हवन यज्ञ में अपार श्रद्धा एवं भक्ति भावना से भाग लिया। मठ परिसर को विशेष रूप से सजाया संवारा गया था। वातावरण अत्यन्त आकर्षक एवं मनोहारी था। समारोह में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, हिमाचल और जम्मू कश्मीर से श्रद्धालु भाग लेने पहुंचे थे। आर्य अतिथियों के रात्रि विश्राम की व्यवस्था प्रौद्योगिक महाविद्यालय, शिक्षा महाविद्यालय के छात्रावासों में की गई थी। रात्रि विश्राम का इतना उत्तम प्रबन्ध था कि किसी को कोई असुविधा अनुभव नहीं हुई। इसका श्रेय मठ के प्रबन्धकों एवं कार्यकर्ताओं को जाता है। प्रातः १०.१५ बजे जिला गुरदासपुर के उपायुक्त माननीय डॉ. अभिनव त्रिखा जी ने तालियों की गड़गड़ाहट एवं वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ दीप प्रज्जवलित कर शुभारम्भ किया। पांडाल में तीन हज़ार कुर्सियाँ श्रोताओं के बैठने के लिए लगाई गई थीं। मंच पांडाल से ६ फीट की ऊंचाई पर बना था जो कलात्मक ढ़ंग से सजाया गया था। मंच संचालन राजस्थान के स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने कुशलता पूर्वक निभाया। सर्वप्रथम सरदार सुरेन्द्र गुलशन ने गायत्री मन्त्र के साथ 'ऊँ' नाम की महिमा का मधुर भजन 'गुरुवाणी' की तर्ज पर गाकर सुनाया। गुलशन जी ने खूब तालियाँ बटोरीं। आर्यजगत् के प्रख्यात भजनोपदेशक जगत वर्मा, पुष्पा शास्त्री, सत्यपाल पथिक, रमेश शास्त्री, संदीप आर्य ने भी अपने भजन सुनाकर खूब वाह वाही लूटी। शहीदों को श्रद्धांजलि, आध्यात्मिक, पाखण्ड खण्डन, मठ की महिमा, नारी उत्थान, ऋषि महिमा, आर्य समाज का गुणगान, युवा समाज, नारी उत्थान, जीवनोपयोगी प्रेरणाप्रद मधुर और कर्णप्रिय भजन सुनकर आर्यजन धन्य हुए। परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष डॉ. धर्मवीर शास्त्री जी ने अपना व्याख्यान देते हुए बताया कि जहाज से शरीर तो उड़ाया जा सकता है किन्तु आत्मा नहीं। उत्तम विचार और संस्कार ही आत्मा को उड़ान दे सकते हैं जिसके लिए वेद पढ़ना, जानना एवं समझना जरूरी है। बच्चा उत्पन्न होता है तो उसके कान में 'वेदोऽसि' कहते हैं जीभा पर शहद से ऊँ अंकित करते हैं। वेद का रास्ता शरीर से आत्मा की ओर जाता है। उपायुक्त डॉ. अभिनव त्रिखा जी ने अपने सम्बोधन में बताया कि इस मठ की स्थापना लौहपुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने १९३८ में आज से ७५ वर्ष पूर्व की थी। डायमण्ड जुबली पर सभी आर्यजनों के बधाई। इस मठ के कारण दीनानगर क्षेत्र का पिछड़ापन दूर हुआ है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार में मठ ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। इस क्षेत्र की उन्नति का श्रेय मठ को जाता है। प्रशासन की ओर से किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो तो हम सदैव तत्पर हैं और अपने को धन्य मानेंगे।

चयेरमैन स्वर्ण सलारिया जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि धनदान देना आसान है किन्तु शिक्षा का दान अति कठिन है। मठ शिक्षा प्रसार का जो कार्य कर रहा है उसकी प्रसंशा के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। ऋषि दयानन्द का देश और समाज के लिए योगदान को भूलाया नहीं जा सकता। हम उनके ऋणी हैं। शिक्षाक्षेत्र से जुड़ी भावी योजनाओं के लिए मैं सरकार से वार्ता कर उन्हें हर संभव पूरा करने का प्रयत्न करूंगा। सलारिया जी ने अपने परिवार की ओर से मठ को एक लाख रूपऐ दान की घोषणा की। मठ की स्वच्छता और उत्तम प्रबन्ध के लिए उन्होंने स्वामी सदानन्द और प्रबन्धकों की भूरी–भूरी प्रशंसा की। आज युवा पीढ़ी नशीले पदार्थों की ओर शीघ्रता से आकर्षित हो रही है। मैं चाहता हूँ कि मठ इस कुरीति को दूर भगाने में अहम भूमिका निभाए और युवाओं को सन्मार्ग पर लाने में समाज की सहायता करे।

दयानन्द मठ दीनानगर जिन शैक्षणिक संस्थाओं का संचालन कर रहा है, वे हैं–वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाऐं, डिग्री कॉलेज, बी.एड.कालेज, पालिटैक्निक, प्रौद्योगिक संस्थान एवं गुरूकुल। गुरूकुल में ६० ब्रह्मचारी संस्कृत और वैदिक शिक्षा का अध्ययन कर रहे हैं। निर्धन परिवार के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करवाई जाती है जिनका सारा खर्च मठ वहन करता है। मठ की १५ बीघा के लगभग उपजाऊ भूमि हैं जिस में गऊओं के लिए चारा तथा फसलें उगाई जाती हैं। मठ में ५० के लगभग गऊऐं पाली हैं, जिनके दूध का उपयोग मठ में रहने वाले ब्रह्मचारी और सन्यासी करते हैं। मठ में दोपहर का भोजन नहीं बनता। प्राचीन पारम्परिक प्रथा भिक्षावृति इस मठ में २१ वीं सदी में भी प्रचलित है। २५० चिन्हित घरों से ब्रह्मचारी प्रतिदिन भिक्षा के रूप में रोटी, दाल, सब्जी 'भिक्षां देहि' अलख जगाकर एकत्र करते हैं। मठ में रहने वाले ब्रह्मचारी और सन्यासी उसी भोजन को मिल बैठ कर ग्रहण करते हैं। स्थानीय

www.thearyasamaj.org

निवासी मठ को भोजन दान करना अपना परमधर्म मानते हैं। आचार्य नन्द किशोर जी ने नेपाल के विराट नगर में आर्यसमाज की स्थापना की है। आचार्य जी ने बताया कि वेद भगवान की वाणी है। वेद सभी धर्मों में मान्य है। जैसे हिन्दू अपने नाम के साथ 'द्विवेदी', 'चतुर्वेदी' लिखते हैं वैसे मुसलमान भी 'चतुर्वेदी मौलाना' लिखते हैं। कोलकता से सत्यवान वानप्रस्थी जी की शिकायत थी कि विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली पाठ्य पुस्तकें वेद के अनुसार नहीं बनी। आधुनिक शिक्षा मैकालेमय बनती जा रही है। पुस्तकों में वेद की शिक्षाओं का प्रावधान हो। मेरा प्रस्ताव है इसे क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज की शिक्षा संस्थाऐं इस ओर विशेष पग उठाऐं ताकि भावी विद्यार्थी नैतिक शिक्षा की ओर अग्रसर हों।

संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन :– आज भारत में स्वदेशी शासन है किन्तु शासक स्वार्थ की सोच रखते है। युवाओं से देश को बहुत आशाऐं है किन्तु आज का युवा 'Eat, Drink and be marry' की नीति पर विश्वास रखता है। फिल्म तारिकाऐं निरंकुश बनी हैं, धन के लालच मैं हया बेच डाली संस्कृति का ह्रास हो रहा है। पं. राम निवास आर्य :– संस्कृत भाषा को समाप्त करने के लिए बहुत बड़ा षड्यन्त्र चल रहा है। संस्कृत जो स्कूलों में अनिवार्य विषय होता था उसे ऐच्छिक विषय बना दिया किन्तु अब तो इस का स्थान जर्मन, फ्रैंच और अरबी ले रही है। संस्कृत विषय में स्नातकोत्तर करने वाला विद्यार्थी आज नगन्य है उसका कोई भविष्य नहीं। संस्कृत और संस्कृति के उत्थान के लिए दानी १० लाख रुपऐ तो दे सकता है किन्तु संस्कृत पढ़ने के लिए १० विद्यार्थी उपलब्ध नहीं करवा सकता। महाशयां दी हट्टी (MDH) के संस्थापक ६१ वर्षीय श्री धर्मपाल महाशय जी जिन्हें आर्य समाज ने 'भामाशाह' का खिताब दिया है ने संस्कृत और संस्कृति सम्मेलन की अध्यक्षता की। मठ में पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत हुआ। महाशय जी ने 'लौह पुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द द्वार' का उद्घाटन वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ किया। स्यालकोट से दिल्ली आकर रचे बसे एक समय तांगा चला कर जीविका अर्जित करने वाले महाशय जी आज अरबपति हैं। उनका उद्योग अन्तर्राष्ट्रीय ऊंचाईयों को छू चुका है। उन्होंने मठ को पांच लाख पांच हज़ार पांच सौ पचपन रूपये का दान देकर पुण्य प्राप्त किया। महिला सम्मेलनः– मंच संचालन भारती आर्या ने कुशलता पूर्वक निभाया डॉ. पुष्पा शास्त्री जी ने मंच पर अपने क्रान्तिकारी विचारों से महिला समाज में स्फूर्ति, नव चेतना और नई जान फूंकी। ऋषि की कृपा से हमें वेद पढ़ने पढ़ाने, हवन यज्ञ करने, ऊंचे पदों पर आसीन होने का सोभाग्य प्राप्त हुआ है। धर्म के ठेकेदार तो नारी को पांव की जूती समझते थे। मैं उनसे पूछना चाहती हूँ कि गधी का बच्चा गधा, घोड़ी का बच्चा घोड़ा, कुत्ती का बच्चा कुत्ता तो जूती का बच्चा ..... , सामान्य ज्ञान का प्रश्न है। नारी देश की आन, वान, शान और वीर प्रसु है। अबला मत, सबला बन, महिला को जाग्रत होना ही होगा। लड़की ने मुझ से शिकायत की–'मुझे लड़के ने छेड़ा। मैंने उसे पूछा–'तेरे क्या हाथ नहीं थे। चप्पल उतार कर उस के सिर पर क्यों न टकाई ? तू इधर आ, पहले मैं तेरे ही दान्त तोड़ती हूँ।'' हमें अपनी बेटियों को इस योग्य बनाना है जो ईंट का जबाव पत्थर से दें। तभी दुष्कर्मों पर रोक लगेगी कानून बनाने मात्र से कुछ न होगा। रानी आर्या जी ने वीररस से ओत–प्रोत कविता सुनाई। प्रिंसीपल निर्मल पांथी :–हम नवरात्रों में दुर्गा पूजा कर के सुख–समृद्धि की कामना करते हैं। दक्षिणी भारत में प्रत्येक कन्या और महिला को माँ पुकारा जाता है। बेटी को जन्म लेने से रोकते हैं। क्या जाने कौन बेटी गार्गी, पदमिनी, झांसी की रानी, किरण वेदी, कल्पना चावला, विच्छेन्द्री पाल, बन जाती। प्रिंसीपल शैल्या निरंकारी :– महिला अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के किए स्वयं जिम्मेवार है। Respect is commanded not demanded अपनी शक्ति को समझो, उसे बाहर लाओ। समाज–सुधार के लिए स्वयं पग उठाना होगा। डॉ. अनिता :–नारी ने देव दयानन्द, स्वतत्रानन्द, वीर सावरकर, सरदार पटेल जैसे लौह पुरुष दिये किन्तु आज नारी पाश्चात्य सभ्यता को अपना कर गर्व अनुभव करती है। प्रातः अपने बच्चों के साथ 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण कर आत्मा की बैटरी को चार्ज करो अपनी मर्यादा और संस्कृति को न भूलो।

डॉ. प्रतिभा जम्मू युनिवर्सिटी :– वेद ने कहा–नारी तू भूमि है। सबको धन–धान्य प्रदान करती है, सबका बोझ उठाती है। नैनों का नीर बचा कर, जन जन की प्यास बुझाती है।

युवा सम्मेलन का मंच संचालन रामफल सिंह आर्य जी ने किया। आर्यन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झोझकलां के विद्यार्थियों ने 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला' गाने के साथ मंच पर सैंन्ट्रल जेल लाहौर में भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दिये जाने का मंचन किया। जेलर के संकेत करते ही जल्लाद हरकत में आया। तीनों देश भक्तों के सिर लुड़के गये, संगीत बंद हुआ सन्नाटा छा गया और वातावरण गमगीन हो गया। दर्शक भावुक हो उठे। अनेक नर–नारियों को आंसू पौंछते देखा गया।

चन्द्र देव आर्य :– युवाकाल जीवन का बसन्तकाल होता है। १६ से २५ वर्ष की सस्य श्यामला सुन्दर आयु है।

www.thearyasamaj.org

देश की आजादी के लिए ६ लाख वीरों ने जाने अनजाने प्राणों की आहुति दी थी।

स्वामी देवव्रत :– जवानी नाम है बलिदान, विषपान, चुनौती और संकटों को झेलने का राष्ट्र और धर्म के लिए कुछ कर गुजरने की ललक का। यदि रूस और अमेरिका शान्ति की बात करें तो बात समझ में आती है, कमजोर की शान्ति तो उपहास बन जाती है। शोभायात्रा :– स्कूल कालेज के विद्यार्थी, नर–नारी ऊँ ध्वज लेकर आर्य वीर घोड़े पर, बैण्ड बाजों की धुन पर, खुली गाड़ी में भजनोपदेशक, युवक पारम्परिक वेशभूषा में भंगड़ा डालते, ट्रैक्टर ट्राली में पालकी पर संन्यासीवृन्द, यज्ञवेदी, आर्य वीर दल प्रदर्शन करते हुए दीनानगर के बाजारों से गाते बजाते चले तो घरों से बच्चे बूढ़े, नर–नारी बाहर निकल आये। पुष्प वर्षा करते हुए रोमांचित हो उठे।

मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी :– तीन दिन से विद्वान् डाक्टर के रूप में दवा देते रहे। अब हम पूर्ण स्वस्थ हो गये हैं, हमारी बैटरी पूरी चार्ज हो गई है आर्य समाज का काम करने के लिए। हीरक जयन्ती, ७५ वर्ष का योग ७+५=१२ बनता है, १२ का योग ३, तीन बाते हमेशा याद रखें तप + स्वास्थ्य + ईश्वर पर विश्वास। सभी ट्रस्टियों, आर्यजनों, प्राशनिक अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, प्रबन्धकों एवं दूर–दूर से आऐ आर्य बन्धुओं का धन्यवाद। स्वामी सुमेधानन्द जी का आयोजन को सफल बनाने के लिए धन्यवाद। पूज्य ऋषि और गुरू की कृपा से कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। वेद किसी को हिन्दू, सिख, ईसाई, बोध, जैन नहीं मानता। वेद कहता है 'मनुर्भव' इन्सान बनो।

फरिस्ते से बेहतर है इन्सान बनना
मगर इसमें लगती है मेहनत ज्यादा।

"आर्य समाज मिसीसागा, कानाडा"

♦ ज्ञानेश्वर आर्य

♦अमेरिका सभा का चार दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न होने के बाद V.C.C. आर्य समाज मारखम का साप्ताहिक गायत्री महायज्ञ का समारोह हुआ, जिसमें दोनों समय यज्ञ तथा प्रवचन हुये, एक दिन २०८ कुण्डीय यज्ञ हुआ जो विशेष उपलब्धि कही जा सकती है। शेष दिनों में आर्य समाज मिसीसागा तथा अनेक परिवारों में प्रवचन, अध्यापन, शंकासमाधान आदि कार्यक्रम भी चलते रहे। यथा अवसर ध्यान आदि भी कराता रहा।

♦भारत से बाहर पाश्चात्य एवं पौर्व्य देशों की यात्राएं जितनी बार की, उतनी ही बार उनकी, समृद्धि, ऐश्वर्य और उसके कारणों, पुरुषार्थ, लग्न, अनुशासन, दायित्व निर्वहन, त्याग, तपस्या, दण्ड व्यवस्था, समय का परिपालन, सुप्रबन्ध, राष्ट्रहितप्रेम, दूरदर्शिता आदि को देख–सुनकर अन्तः करण प्रफुलित हो जाता है। वैदिक आध्यात्मिक सिद्धान्तों, जिनसे ये प्रायः अनभिज्ञ हैं, उनको छोड़ देवें, किन्तु जीवन को अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कैसे उत्तम रीति से सुन्दर–सुव्यवस्थित जीया जाये, यह बात हमारे लिए स्तुत्य, प्रेरक तथा अनुकरणीय है।

♦कहने को तो हमारे पास आज उच्च स्तर का आध्यात्मिक गूढ विज्ञान है– जिनको व्यवहार में लाने से जीवन में परम शान्ति, आनन्द, सन्तोष, स्वतन्त्रता, निर्भीकता मिलती है किन्तु आज वह विज्ञान मात्र पुस्तकों में ही रखा है या मंच पर कहने व सुनने तक सीमित रह गया है। या फिर इस विज्ञान का मुखौटा बनाकर भोली–भाली जनता को भ्रमित करके एषणाओं की पूर्ति की जा रही है, निर्मल बाबा इसका ज्वलन्त उदाहरण है। राष्ट्र की राजनैतिक धार्मिक, चारित्रिक, नैतिक, व्यावहारिक पतन की पराकाष्ठा की स्थिति को, सभी क्षेत्रों में कार्यरत बुद्धिजीवी न जानते हों, ऐसा नहीं है, किन्तु व्यक्तिगत धन, पद, प्रतिष्ठा से सम्बन्धित स्वार्थ, अंहकार, हठ, दुराग्रह के कारण जानते हुए भी, निष्क्रिय बैठे हैं, बल्कि जो कुछ आदर्श, सत्य, न्याय युक्त बातों को स्थापित करने के लिए प्रयास कर रहे हैं, उनकी प्रशंसा, समर्थन सहयोग करने की बात दूर रही, उनको अपना विरोधी, शत्रु मानकर येन केन प्रकारेण उन पर मिथ्या आरोप लगाकर उनको गिराने, बदनाम करने यहाँ तक कि उनको जेल भिजवाने और मरवाने तक का हर प्रकार से षड्यंत्र करते हैं। अन्ना हजारे, बाबा रामदेव आदि अनेक उदाहरण हमारे समक्ष हैं। निश्चित रूप से यह राजनैतिक स्थिति धन, सत्ता, बुद्धि, शक्ति का दुरुपयोग है, जो कालान्तर में भंयकर दुष्परिणामों को उत्पन्न करने वाली है तथा क्रान्ति को उत्पन्न करने वाली है।

♦'धर्म निरपेक्षता', 'सर्वधर्मसम्भाव, 'अनेकता में एकता' शब्द सुनने पढ़ने को अच्छे लगते हैं, किन्तु सूक्ष्मता से गहराई में जाकर देखें तो पता चलेगा कि सम्पूर्ण इतिहास यह बताता है और वर्तमान में प्रत्यक्ष हम देख सकते हैं कि यह सिद्धान्त व्यवहार में पूरा कभी नहीं उतरा न उतर रहा है। २०वीं शताब्दी के विश्व इतिहास में किसी एक ही देश में सबसे भयावह, क्रूर, हिंसक घटना भारत वर्ष में घटित हुई। भाई–भाई कहलाने वाले, साथ रहने वाले दो भिन्न धर्मानुयायियों का प्रेम, विश्वास, श्रद्धा, सौहार्द, भाई चारा

www.thearyasamaj.org

सम्बन्ध सब झूठा सिद्ध हो गया। सारे देश के एक पक्षीय समुदायों के न चाहते हुए भी, लाख प्रयत्न करने पर भी विभाजन को रोक न सके। लाखों परिवार बेघरबार हुए, भंयकर कत्लेआम हुवा, लूट खसोट, बलात्कार हुए और लाखों विधवाएं बनी, बच्चे अनाथ हुए, बलात् धर्म परिवर्तन किया गया, न जाने क्या–क्या हुआ, पढ़ सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लाखों करोड़ों के मालिक, अगस्त ४७ में पंजाब, दिल्ली, राजस्थान आदि प्रान्तों में रोड़पति बन गये, दो रोटी के लिए हाथ पसारे सड़कों के किनारे, गर्दन नीची किये, देखे गये। दिल दहल जाता है उसे याद करके।

♦विभाजन के जो कारण, उस समय थे, वे आज भी वैसे ही हैं। कैंसर को जड़मूल से न नष्ट किया जाये तो फिर उभर जाता है, मूल–जड़ नहीं उखड़ती है तो फिर कीकर थोर उभर जाता है। जिन व्यक्तियों के उद्‌गम स्थान बाहर हैं, देवी देवता, धर्मगुरु, तीर्थ स्थान, धर्मबन्धु बाहर हैं, जो राष्ट्रगीत, राष्ट्र संविधान, राष्ट्र संस्कृति, आदर्श, परम्परा, सिद्धान्त के प्रति श्रद्धान्वित नहीं हैं, इनकी अवमानना करते हैं, हंसी उड़ाते हैं, वे कैसे राष्ट्रप्रेमी बन सकते हैं ? जो अपने मत को सर्वोच्च दर्शाने के लिए कुछ भी करने को तत्पर हैं चाहे वह आतंकवाद हो या उग्रवाद, उनसे धर्मनिरपेक्षता की आशा हमारे राजनेता, धर्मनेता, अभिनेता, टी.वी. नेता, रक्षा नेता आदि क्यों लगाये बैठे है!!!

♦चीन या पाकिस्तान के हमलों से हम मुकाबला करने में सक्षम हो भी जायें, किन्तु जो घर में ही जयचन्द रुपी विद्रोही बैठे हैं, वहां कौन सी सेना या पुलिस सामना करेगी? औवेसी जैसों को रोकने का क्या उपाय है ? संविधान पुलिस, नेता इन दुराग्रही, हठी, अन्याय–पक्षपात पूर्ण बातों को मनवाने के लिए मरने को तैयार हैं, कैसे रोकेंगे ? या तो जैसा वे चाहते है, वैसा सहने के लिए हम तैयार हो जायें या फिर संघर्ष के लिए या फिर नये देशों की स्थापना के लिए, देश के टुकड़े करने के लिए ''नान्य पन्था विद्यते अयनाय''। हे ईश्वर हमें बुद्धि, शक्ति, साहस, पराक्रम, ओज प्रदान करो, जिससे हम इस अवश्यंभावी घटना का सही, सफल समाधान निकालने हेतु अभी से समर्थ हो जायें।

'हाय! यह मोटापा और फास्ट फूड'

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

कोई भी छोटे वाहन का चालक किसी मोटे व्यक्ति को अपने वाहन में बिठाने से झिझकता है। वह जिस ओर बैठता है, उस तरफ का पहिया बैठ जाता है वाहन चलाने में कठिनाई आती है परन्तु भाड़ा उतना ही मिलता है जितना सामान्य सवारी से प्राप्त होता है। हाँ पैरिस एयर लाईन्स ने मोटे व्यक्ति का किराया दो गुणा लेना आरम्भ कर दिया है। इंगलैण्ड में मोटे आदमी के दफनाने के दुगने दाम लगते हैं। धोबी उनके कपड़े धोने और दर्ज़ी सीने से कतराते हैं। मोटों की संख्या विश्व में तेज़ी से बढ़ रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े बताते हैं कि पांच से बाईस वर्ष के बच्चों का भार सामान्य से काफी अधिक बढ़ रहा है और वे कई रोगों की चपेट में आ रहे हैं। ऐसे बच्चों में दृष्टि दोष अधिक पाया गया है। उनकी धमनियाँ सामान्य से अधिक मोटी पाई गई हैं जिससे उन्हें हृदय विकार से पीड़ित होने का भय बना रहता है। इंगलैंड और अमेरिका में मोटापा महामारी का रूप ले रहा है। मोटापे के शिकार पश्चिमी देश ही नहीं, अपितु चीन, थाईलैण्ड, ब्राजील तथा भारत भी हैं। पश्चिम में मोटापा कम आय वाले वर्ग में पाया जाता है जबकि भारत में सम्पन्न लोग अधिक मोटे होते हैं। मोटापे के कारण छोटे बच्चे भी मधुमेह, दिल और सांस के रोगों से पीड़ित हो रहे हैं। शहरी लोग जो बैठे–बैठे टैलीविजन देखते रहते हैं या कम्प्यूटर पर घण्टों काम करते हैं, मोटे होते देखे गये हैं। फास्ट फूड भी मोटापे का एक कारण है और फास्ट फूड़ का हर तरफ बोलवाला है।

फास्ट फूड में नूडल, बर्गर, हॉट डाग, पीज़ा चिप्स, पास्ता, केक पेस्ट्री, ब्रैड सैंडविच आईसक्रीम, केक, पेस्ट्री और कोल्ड ड्रिंक्स सभी आते हैं। ये पकाने में आसान या ये खाने और पीने के लिये तैयार मिलते हैं। ये आकर्षक पैक्टों में डाले होते हैं और आसानी से हर दुकान से उपलब्ध हो जाते हैं। कम्पनियाँ इन के विज्ञापनों पर दिल खोल कर खर्च करती हैं। अतिथि भी बच्चों के लिये यही उपहार लाते हैं या देते हैं। फास्ट फूड धीमा ज़हर है। अब तो मेलों में भी इन्हीं के स्टाल देखने को मिलते हैं। बच्चे इन की ओर खींचे चले आते हैं। यह जानते हुये भी कि फास्ट फूड स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है, माता–पिता बच्चों की जिद के आगे अपने को बेबस पाते हैं या नरम पड़ जाते हैं। बच्चों में पेट के रोग बढ़ रहे हैं। अक्सर बच्चे पेट की पीड़ा की शिकायत करते हैं डॉक्टर उन्हें मैदा युक्त वस्तुएं न खाने की सलाह देते हैं। इससे आन्तों में सूजन आ रही है। हाज़मा बिगड़ रहा है। कारोबारियों ने फास्ट फूड का जाल हर ओर बिछा रखा है। हमें स्वयं सजग होना पड़ेगा। नई पीढ़ी पारम्परिक व्यंजनों को भूल रही हैं जो स्वाद से भरपूर और पौष्टिकता

www.thearyasamaj.org

में उत्तम होते हैं। इसमें कुछ दोष हमारा भी है। हमने भी उन व्यंजनों के प्रति उनकी रूचि बढ़ाई नहीं। फास्ट फूड बचपन से ही स्वास्थ्य को खोखला कर रहे हैं। हमें उन्हें फास्ट फूड खाने से रोकना होगा और सन्तुलित भोजन खाने की आदत डालनी होगी यह कार्य आसान नहीं परन्तु असंम्भव भी नहीं। जब जागो तभी सवेरा। इसमें माता–पिता की भूमिका अति महत्वशाली है। यदि बच्चों को स्वस्थ देखना चाहते हो तो उन्हें फास्ट फूड से दूर रखना ही होगा। सम्पन्न परिवारों के ५ प्रतिशत तथा मध्यवर्गीय परिवारों के १ प्रतिशत बच्चे भारत में मोटे पाये गये। कुछ लोग फास्ट फूड को आधुनिकता से जोड़ कर देखते हैं। मध्यम वर्ग की गृहणियां व्यस्त होने के कारण अपने समय बचाने के लिये बच्चों को फास्ट फूड देती हैं। मैगी के विज्ञापन में मम्मी दो मिन्ट में मैग्गी खाने को परोस देती है। बस कुछ गृहणियाँ वैसा ही कर सहेलियों से डींग हांकती हैं। वे नहीं समझतीं कि इस तरह बच्चों को रोग परोस रही हैं। बच्चे भी अपना समय दूरदर्शन देखने में बिताते हैं। वे व्यायाम से दूर होते जा रहे हैं। याद रखें मोटापा न ही सम्पन्नता और न ही अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है। हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। भोजन की आदत का दृष्टिकोण बदलना होगा। भोजन की आदत सुधारनी होगी और फास्ट फूड से प्यार छोड़ना होगा। मोटापे से हानियाँ बहुत हैं परन्तु लाभ यही हैं कि सामने वाला लड़ने से डरता है। समाचार पत्र में एक घटना का वर्णन आया था। कि सांप मोटे आदमी के विस्तर पर चढ़ गया। मोटे आदमी ने पक्ष बदला। नीचे आने से सांप की मृत्यु हो गई परन्तु मोटे का कुछ न बिगड़ा। वह शायद भाग्य का धनी होगा। लेखक बर्नार्ड शा भवन की ऊपर की मंजिल में रहता था, बीमार हो गया। डॉक्टर को बुलाया गया। जब डॉक्टर पहुंचा तो लिफ्ट की बिजली चली गई। डॉक्टर मोटा था। सीढ़ियाँ चढ़ कर जब वह पहुंचा तो उस की अवस्था दयानीय थी, वह बुरी तरह हाँफ रहा था पसीने से तर था। वह निढाल होकर कुर्सी पर आराम करने लगा। शा ने उसे बिस्तर से उठकर पानी दिया। फिर एक गोली दी और बोला, 'यह ले लो, इससे तुम्हें आराम मिलेगा। घी की वस्तुएं न खाया करो। फल, सब्जी खाया करो। नृत्य करके भार घटाओ। तुम डॉक्टर हो, दूसरों को बेकार की सलाह देते हो जैसे एक डाकिये को सलाह देंगे कि घूमा फिरा करो। जबकि उसका काम घूमना फिरना है। मैं लेखक हूँ, मुझे लिखने से मना करोगे परन्तु मैं लिखने से ही जिन्दा हूँ।' मोटापे के बारे हम सब डॉक्टर की तरह लापरवाह हैं और दूसरों को ऐसी सलाह देंगे जिन पर हम स्वयं अमल नहीं करते।

''एक ईश्वर की पूजा''

♦ऊषा आर्य, आर्य समाज नादौन

परम पिता परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त है। यह विशाल संसार अंतरिक्ष, कोटि–कोटि ब्रह्मांड, इन सबके कण–कण में ईश्वर की असीम सत्ता विद्यमान है। वही इस सब का निमन्ता है, नियामक है। हर वस्तु में, जड़ चेतन में, हमारे रोम–रोम में ईश्वर का वास है। वह निराकार परमेश्वर दिखाई नहीं देता परन्तु वही हमारी प्राण शक्ति है सोते जागते वह हर समय हमारे साथ रहता है। हमारे अन्दर बाहर सभी दिशाओं में विद्यमान रहता है। ईश्वर सर्वव्यापक है। संसार के कोने–कोने में सभी जीव जन्तुओं में पशु, पक्षियों में सभी प्राणियों के रोम–रोम में उस ईश्वर की सत्ता विद्यमान है।

इस सर्वव्यापक परमेश्वर की अनेकानेक शक्तियाँ हैं जिन्हें संसार के विभिन्न मताबलंवी भिन्न–भिन्न नामों से पुकारते हैं। सब मनुष्यों का परमपिता परमेश्वर एक ही है। वही इन्द्र, ब्रह्मा, वरूण, अग्नि, यम सब कुछ है। चाहे उसे राम कहो या कृष्ण, शिव कहो या शंकर या अल्लाह कहो नाम का नहीं, ईश्वर के गुणों का महत्व है। उन गुणों को अपने जीवन में उतारने, उनके अनुसार आचारण करने और जीवन में व्यवहार करने को ही परमात्मा की उपासना करना कहते हैं। इस प्रकार उपासना करने से बारंबार के अभ्यास से वे गुण मनुष्य के स्वभाव का अंग बन जाते हैं। और वह उत्तरोत्तर त्रेष्टता को प्राप्त करते हुए देवत्व की ओर अग्रसर होता है।

परमात्मा के अलग–अलग नामों को ले कर झगड़ा करना सबसे बड़ी मूर्खता है। एक ही परमेश्वर को विद्वान लोग भिन्न–भिन्न नामों से पुकारते हैं। उसका कोई भी नाम लें पर उसके गुणों को अपने कर्म व स्वभाव का अभिन्न अंग बनाने हेतु सतत प्रयास करते रहें।

आजकल अधिकांश लोग ईश्वर के गुणों का न तो चितंन करते हैं और न उन्हें अपने आचरण में उतारने का प्रयास करते हैं। लेकिन उसके नाम पर इस प्रकार लड़ने मरने को तैयार रहते हैं मानो उस पर उनका ही एकाधिकार है। वे यही समझते हैं कि केवल मन्दिर के भीतर ही उसकी सत्ता है, बाहर जो भी पापकर्म करो भगवान देखता ही नहीं। उसके सर्वव्यापक रूप को तो जैसे भुला ही दिया गया है। संसार के कोने–कोने में उसकी सार्वभौम सत्ता है, इस तथ्य को सदैव ध्यान में रखना अत्यावश्यक है।

प्रभु के नाम व उसके गुणों का चिंतन करते रहें, अपना जीवन सफल बनावें।

www.thearyasamaj.org

''सत्याग्रह की वैदिक समीक्षा''

♦ आचार्य आर्य नरेश, वैदिक गवेषक, उद्गीथ साधना स्थली, (हि.प्र.)–१७३१०१

हर्षि याज्ञवल्क्य शतपथ ब्राह्मण व्याख्या ग्रन्थ में लिखते हैं कि किसी भी राष्ट्र का राजा अंकुश रहित, स्वतन्त्र न रहना चाहिए। राजाधिकारी सभा व प्रजा के अधीन हो एवं सभा व प्रजा राजा के अधीन हों। ऐसा न होने से स्वछन्द राजा प्रजा का ठीक वैसे ही विनाश करता है जैसे आज भारत का हो रहा है। जब राज सभा के अध्यक्ष को रामलीला सभा में राष्ट्र के अनेक प्रबुद्ध सन्यासियों धर्माचार्यों व देश भक्त राजनेताओं द्वारा कहा गया कि देश की जनता को चूस व उसे दीन–हीन–गरीब बनाकर विदेशी बैंकों में रखा गया धन विधेयक पारित करके राष्ट्र की सम्पदा किया जाए एवं धन लूटकर ले जाने वालों को देशद्रोही घोषित करके फांसी जैसा कठोरतम दण्ड दिया जाए तो इससे राज–अध्यक्ष के कान पर जूँ तक न रेंगी। लगभग एक लाख लोगों की सभा को भ्रष्ट राजाध्यक्ष और अधिकारियों ने व्यर्थ समझ कर अनसुना कर दिया। छत्रपति शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास 'प्रवचन–पारिजात' में कहते हैं कि दुष्ट राजा सात्विकता से नहीं तामसिकता से मानता है।

महर्षि देव दयानन्द राजधर्म (विश्व पर चक्रवर्ती राज करने वाली सर्वहितकारी व सर्वोन्नतिकारी) राजनीति का प्रकाश करते हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि राजा व राजाध्यक्ष प्रजा के अधीन हों। उन्हें भी गलती, राष्ट्र हत्या करने पर दण्डित किया जाए। विश्व के मानव समाज के प्रथम संविधान में महर्षिमनु का वचन है–''वाग्दण्डं प्रथम कुर्याद्... वधदण्डमतः परम्'', प्रजा व राजधिकारी कोई भी हो उसे सचेत करने हेतु प्रथम–निन्दा दण्ड, द्वितीय धिक् दण्ड, तृतीय धनदण्ड और इतने पर भी पाप और राष्ट्र द्रोह न छोड़े तो मृत्यु दण्ड देना चाहिए। धन के दण्ड में साधारण प्रजा की अपेक्षा राजा को हजार गुणा अधिक दण्ड दिया जाए। यदि राजपुरुषों को अधिक दण्ड न हो तो वे अन्याय और अत्याचार से प्रजा पुरुषों का नाश कर देवें। दण्ड शासति प्रजा सर्वा, दण्डं धर्म विदुर्बुधा।। दण्ड ही धर्म है, वही सब प्रजाओं का ठीक शासन करता है। दण्ड ही राजा है अतः दुष्ट राजाध्यक्ष आदि को सभा दण्डित करे एवं यदि सभा भी मर चुकी हो तो प्रजा उसे एक जुट होकर दण्डित करे न कि भूखी मर कर स्वयं बलहीन होकर दुष्ट के बल को बढ़ाये। ध्यान रहे कि गोरक्षा सत्याग्रह पर भी साधुओं पर सरकार ने गोलियाँ चलवाई थीं।

भारत के गत दो अरब वर्ष के वैदिक राज के इतिहास में दुष्टों व झूठों को सुधारने हेतु प्रथम वाणी द्वारा, शास्त्रार्थ द्वारा 'सत्य' को स्वीकार करने का 'आग्रह' किया जाता था और उसके न मानने पर अपराध के अनुसार, राजमुक्त, देश निकाला या मृत्यु दण्ड दिया जाता था। न्याय के समक्ष तो हमारा संविधान भी सब को बिना पक्षपात के बराबर समझता है। महर्षि ब्रह्मा, महातपस्वी सम्राट श्री शिव, महर्षि मनु एवं प्रथम चक्रवर्ती सम्राट शशबिन्द मानधाता से लेकर युधिष्ठिर आदि पर्यन्त कहीं भी चोर, रिश्वत खोर और देश द्रोही मन्त्री, प्रधानमंत्री या राजा राष्ट्रपति अथवा राजाध्यक्ष को भूख हड़ताल द्वारा सुधारने की चर्चा नहीं है। मनुस्मृति, शुक्रनीति, विदुरनीति, कृष्णनीति तथा चाणक्यनीति में कहीं दुष्टों को दुष्टता से रोकने हेतु प्रजा द्वारा भूखे मरने का विधान नहीं है। सर्वप्रथम उसे बातचीत द्वारा न माने तो शास्त्रार्थ द्वारा परन्तु फिर भी न माने तो नन्द की तरह मृत्युदण्ड का ही विधान है। योगेश्वर कृष्ण के बार–बार समझाने पर दुर्योधन जब नहीं माना एवं महापण्डित चाणक्य द्वारा समझाने पर जब प्रजा के धन व धर्म का हरण करने वाला 'नन्द' न माना तो उन्हें मृत्यु दण्ड ही दिया गया। न तो राम ने रावण को मानने हेतु, नहीं कृष्ण ने कंस, दुर्योधन, जरासंध शिशुपाल को मानने हेतु एवं न ही पं. चाणक्य ने नन्द को समझाने हेतु भूख हड़ताल की थी। इसलिए लोक में प्रसिद्ध है कि लातों के भूत बातों व भूखे मरने वालों से नहीं माने। अंग्रेज़ों के भारत न छोड़ने पर महर्षि दयानन्द, श्याम जी कृष्ण वर्मा या लाला लाजपत राय ने कभी भूख हड़ताल न की एवं न ही करने का विधान किया अपितु देवदयानन्द के पटु शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने दिल्ली में लार्ड हार्डिंग पर बम्ब फैंकने का समर्थन किया। गोरे भी देव दयानन्द, भगत सिंह, बिस्मिल, चन्द्रशेखर जैसे शिष्यों द्वारा गोली–गोले मारने पर ही गए। गोरी सरकार का खुफिया अधिकारी मिस्टर लैण्ड लिखता है कि भारत में अंग्रेजी सरकार को सब से बड़ा खतरा आर्य समाज के क्रान्तिकारियों से है। वैसे भी गांधी जी, अन्ना जी, विनोबा जी, मेधा पाटेकर, चानु शार्मिला आदि को सरकार से कोई बड़ी वस्तु नहीं मिली, मिला तो देशों के काले अंग्रेज़ों को सत्तापरिवर्तन, वही हज़ारों अंग्रेज़ी कानून, देश का बटवारा या उसमें गोहत्या, आतंकवाद कश्मीर समस्या व भ्रष्टाचार।

www.thearyasamaj.org

ऐसे थे देव दयानन्द

♦स्वामी सत्यानन्द

सेठ पन्नालाल जी स्वामी जी के एक श्रद्धालु भक्त थे। उनको एक प्रतिष्ठित पुरुष ने कहा कि यदि आप मेरे लड़के को स्वामी जी से सुधरवा दें तो मैं आपका बड़ा भारी उपकार मानूँगा। इससे मेरे वंश को बचा दोगे।

वह युवक बहुत बिगड़ा हुआ था। अपने घर की भूमिहारी की कुछ भी सार सम्भाल न किया करता था। प्रतिदिन वाराङ्गनाओं के साथ उद्यान बिहार के लिये जाता और रात–दिन उन्हीं के यहाँ पड़ा रहता था।

पन्नालाल जी ने उस युवक की दशा का श्रीगुरु–चरणों में वर्णन कर के उसके सुधारने की, विनय की। महाराज ने कहा कि यदि आप उसे एक बार मेरे निकट ले आयें तो मैं उसका पाप–कर्म छुड़ा दूंगा। पन्नालाल जी ने घर जाकर दो सुशील युवकों को बुलाया और कहा कि किसी प्रकार उस कु–व्यसनी युवक को समझा–बुझाकर स्वामी जी के पास ले चलो। वे सुशील कुमार पहले भी उसके अच्छे परिचित थे। इसलिए दो–तीन दिन ही के मेल–मिलाप से परस्पर प्रेमबद्ध हो गये। समय पाने पर वे युवक उस कु–व्यसनग्रस्त युवक को स्वामी जी के दर्शन करने की बार–बार प्रेरणा करते थे और कहते थे कि स्वामी जी बड़े त्यागी परमहंस हैं, न किसी से कुछ लेते हैं और न झगड़ते हैं, अति शांतस्वरूप हैं। उनके वचनों में बड़ा माधुर्य है। उनकी युक्तियों में बड़ा रस है। ऐसा साधु संन्यासी हमारे नगर में पहले कभी नहीं आया।

जैसे चम्पा के पुष्पों के संसर्ग से तैल में भी सुगन्धि का संचार हो जाता है ऐसे ही उस व्यसनी युवक का हृदय उन सुशील कुमारों के सत्संग से, स्वामी–श्रद्धा की सुगन्धि से सुवासित हो गया। एक दिन तीनों युवक स्वामी जी की सेवा में उपस्थित हुए और विनीतता से नमस्कार करके बैठ गये।

महाराज अपने प्रेम–भरे नेत्रों की पवित्र ज्योति से युवकों के मुखमण्डल को उज्ज्वल करते हुए उपदेश देने लगे–"सौम्य युवको ! वैसे तो व्यसन सभी बुरे हैं, परन्तु वेश्या सबसे अधिक नाशकारिणी है। इस व्यसन से सुरापान की बान सहज में पड़ जाती है। सभ्य वेष, सभ्य भाषा, सभ्याचार आदि सभी गुण नष्ट हो जाते हैं। कुलाचार पर कठोर कुठाराघात हो जाता है। रात–दिन राग–रङ्ग में मग्न रहने से व्यवहार बुद्धि का अभाव होने लगता है। ऐसा व्यसनी धर्म–कर्म से सदा दूर भागता है। वाराङ्गना अपने वशीभूत जन के मन को कृत्रिम प्रेम से, बनावटी बातों से और हाव–भाव से सदा उत्तेजित रखती है, जिससे व्यसनी लोग अल्पकाल ही में निस्तेज और जीण–शीर्ण–शरीर हो जाते हैं। वैश्या का प्रेम स्वार्थपूर्ण होता है। जब स्वार्थ सिद्धि नहीं होती तो वह बात तक नहीं पूछती।

'वेश्यासक्त के परिवार में आचार की शुद्धि नहीं रहती। उसका वंश नष्ट हो जाता है। यदि वंश नष्ट न भी हो, तो भी उसकी सन्तान का सदाचारी होना महा कठिन है।'

महाराज ने फिर कहा–'युवकों! भला यह तो बताओ कि वेश्यासक्ति से यदि लड़की उत्पन्न हो तो वह लड़की किसकी हुई ?' युवकों ने कहा–"उस वेश्यासक्त पुरूष की।" तब स्वामी जी ने पूछा कि–"वह युवती होकर क्या काम करेगी?" युवक–"और क्या करेगी ? वेश्या बनकर बाजार में बैठेगी।" तब स्वामी जी ने मर्मस्पर्शी शब्दों में कहा कि–"देखिए, संसार में कोई भी भला मनुष्य नहीं चाहता कि उसकी पुत्री वेश्या बनकर बाजार में बैठे, परन्तु वेश्या के अनुरक्त जन ही ऐसे हैं जो अपनी बेटियों को वैश्या बनाते हैं, चकले में बैठाते हैं और द्वार–द्वार पर नचाते हैं। तुम ही सोचो कि क्या यह बहुत बुरी बात नहीं है ?"

यह उपदेश सुनकर कु–व्यसनी युवक के रोंगटे खड़े हो गये। उसका अन्तः करण पाप–कर्म से काँप उठा। उसके सारे शरीर में सनसनी छा गई और उसने भी अपने साथियों सहित यह कहा कि स्वामी जी! आपका कथन सत्य है। वास्तव में वेश्या–प्रेम एक घृणित नीच कर्म है। उस व्यसनी युवक ने स्वामी जी के चरण छूकर वहीं यह प्रण किया कि आज से मैं वेश्याओं के समीप नहीं जाऊँगा और जो रक्खी हुई हैं, उनका अब परित्याग करता हूँ।

भगवान् दयानन्द ने उसे साधुवाद सहित आशीर्वाद दिया और कहा कि सौम्य! ईश्वर कृपा से तेरा जीवन पवित्र हो–तेरी इस समय की बुद्धि सदा बनी रहे।

उस युवक ने फिर श्रीपदपद्म को स्पर्श करके अपने नये जीवनदाता को नमस्कार किया और साथियों सहित अपने घर को चला आया। पीछे से वह युवक स्वामी जी का एक भावनावान् शिष्य बन गया और उनके स्थानीय तथा प्रान्तीय कार्यों में बड़ी सहायता देता रहा।

"गायत्री मन्त्र का भावार्थ"

सच्चिदानन्द, सकल जगत उत्पादक परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ पाप नाशक तेज का हम ध्यान करते हैं। वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को उत्तम प्रेरणा दे।

www.thearyasamaj.org

''मन दोस्त या दुश्मन ?''

♦सुकामा आर्या, ऋषि उद्यान, अजमेर

हम अक्सर कहते हैं कि आज मन उदास है, मन नहीं लग रहा है। मन वस्तुतः है क्या ? इसको, इसके स्वभाव को जानने व समझने का प्रयास करना चाहिए। मन एक Instrument है, यंत्र है जो हमें ईश्वर ने आत्मा के प्रयोग के लिए दिया है। यह बाह्य इन्द्रियों से सूचना लेकर अन्दर पहुंचाने का कार्य करता है। यह वास्तव में एक जड़ वस्तु है, जो बुद्धि व इन्द्रियों के बीच सम्बन्ध स्थापित करके सहायता प्रदान करता है।

'मन के जीते जीत है, मन के हारे हार।'

मन को जीतने के लिए क्या करना चाहिए ? स्वभाव से मन बहुत चंचल है, गतिवान है। हर समय पेंडुलम की तरह घूमता रहता है। कभी दायें, कभी बाएँ, कभी भूतकाल में कभी भविष्यत्काल में, यही हमारे जीवन में तनाव का मुख्य कारण है।

इसकी गति भी बड़ी तीव्र है–समय, स्थान व काल की सीमा को क्षण में पार कर जाता है। मन में विचार एक क्रम से आते हैं, यह एक समय में एक ही कार्य कर पाता है–पर चूंकि गति तीव्र होती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि एक समय में एक से अधिक अनुभूतियाँ हो रही हैं।

चूंकि यह एक जड़ वस्तु है, हम आत्मा चेतन हैं, सो हम इसे अपनी इच्छानुसार चला सकते हैं।

मन को मन के स्तर पर जाकर आप नियंत्रित नहीं कर सकते। यह संभव ही नहीं है। आपने महसूस किया होगा–आप जिस कार्य से अपने को हटाना चाहते हैं, या जिस दृश्य को भूलना चाहते हैं वो ही बार–बार सामने आता है। What you resist will persist जब आपको लगे कि मन नियन्त्रण में नहीं आ रहा है, तो आप किसी भी स्थान पर शांति से बैठ जाएँ–व्यवस्था न हो तो खड़े भी रहकर, कर सकते हैं। लम्बे–लम्बे, गहरे–गहरे श्वास लेना शुरू करें–ध्यान नासिका के अग्रभाग पर केन्द्रित करें और अवांछित विषय को प्रयास से हटाने का प्रयास करें। आप महसूस करेंगे, तुरन्त वो विषय आपके मस्तिष्क से निकल जाएगा। आप जैसे एक छोटे बच्चे को हक से कुछ कार्य करने को बोलते हैं, उसी प्रकार अपने मन को भी निर्देश दें। मन आपकी अवश्य सुनेगा। मन के नकारात्मक विचारों, गुस्सा, शिकवा, अवसाद का प्रवाह रुक जाएगा। आप इनसे निजात पा सकेंगे।

यह मन जब आपकी बात सुनता है, तो मित्रवत् होता है, परन्तु जब आपकी बात, इच्छा के विपरीत चलता है, तो यह शत्रुवत् हो जाता है। इसका व्यवहार नियंत्रित करना हमारे स्वयं के हाथ में है।

यह मन ही सुख व दुःख का कारण है। सामने मेज़ पर गिलास रखा है, जिसमें आधा पानी भरा हुआ है। यह आपके विचार पर निर्भर करता है कि आप इसके आधे खालीपन को चिन्तन का विषय बनाते हैं या आधे भरे हुए को। जीवन किसी का भी परिपूर्ण नहीं है। कहीं न कहीं हरेक के जीवन में अधूरापन, खालीपन है। उस अभाव को अपना विषय–वस्तु बनाकर जीवन में निराशा न लाएँ। जो है, जितना है, जहाँ भी है उसका भरपूर लाभ उठाकर, उससे अपने जीवन को सफल व समृद्ध बनाने का प्रयास करें।

चूंकि मन नकारात्मक विषयों को अधिक पकड़ता है। किसी व्यक्ति ने आपके कार्य लाभ के लिए एक छोटी सी हानि कर दी, तो मन वहीं अटक जाता है। दुःख की अनुभूति देर तक रहती है। सो जब भी कोई ऐसा कटु अनुभव हो उसे वहीं छिटकदें– It is not very difficult to let go. प्रयास से आप परिस्थितियों को, व्यक्तियों को जब ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में छोड़ते रहेंगे, तो मन नकारात्मक विषयों में नहीं अटकेगा।

धीरे–धीरे प्रयास से, श्वास–प्रवास से, अपने ज्ञान से, ईश्वरीय कृपा से हम उच्छृंखल मन पर पूर्ण नियन्त्रण पाने में सफल हो सकते हैं।

कामना

♦मोहन सिंह, चुरढ़

मैं जीवन को आदर्श बनाऊँ, दीन–दुखियों को गले लगाऊँ।
जगत को मैं हंसाऊँ, सबके सुख–दुख में हाथ बटाऊँ।
आर्य बनूँ, सेवा करता जाऊँ, जीवन में सबके बसन्त लाऊँ।
संघर्ष करूँ सबको अपना बनाऊँ,
निज व्यथा तुझसे बतलाता जाऊँ।
मैं जीवन में कभी नहीं गिड़गिड़ाऊँ,
संसार सरोवर में तैरता जाऊँ।
नेक नियत का पाठ पढ़ूँ, सबको पढाऊँ,
मैं हूँ तेरा बस, तुझे मन में बसाऊँ।
चाहत एक यही तुझको, मैं पा जाऊँ,
संघर्षों से जुझूं पल भर ना घबराऊँ।
संसार महायज्ञ में सेवा करता जाऊँ,
पर हित में परमेश्वर की सेवा करता जाऊँ।
इच्छा एक यही प्रियवर सब मेरे,
मैं सबका बन जाऊँ, चलता रहूँ पग–पग पर, बाधाओं से न घबराऊँ।
ऋषिवर दयानन्द के स्वप्न को मैं साकार बनाऊँ,
मानव सेवा को अपना धर्म बनाऊँ, ऐसी कृपा करना मेरे ईश्वर,
मातृभूमि के मैं काम जाऊँ, सब मेरे मैं सब का बन जाऊं।

www.thearyasamaj.org

दिनांक १८ अक्तूबर प्रातः ६ बजे पठानकोट बस पर बैठकर मैं अपने साथियों सर्वश्री माया राम सुप्रसिद्ध समाज सेवी, मोहन सिंह वर्मा, प्रधान पैंशनर्ज कल्याण संघ सुन्दरनगर और उनके अनुज बेस्तु राम आचार्य के साथ दीनानगर मठ में स्वामी सदानन्द जी के नेतृत्व में मनाई जा रही हीरक जयन्ती में भाग लेने सुन्दरनगर से रवाना हुये। दयानन्द मठ दीनानगर में बड़े–बड़े स्वागत गेट देखकर सभी हर्षित थे।

स्वामी सदानन्द जी महाराज ने १८, १६, २० अक्तूबर २०१३ को मठ की हीरक जयन्ती मनाने की पूरी तैयारियों कर रखी थी। मठ में चाय–पान करने के उपरान्त हम पण्डाल में ऐसे बैठे कि पूरा कार्यक्रम देखकर ही उठे। चारों ओर भक्तिरस का आनन्द छाया था। स्वामी सदानन्द जी महाराज ने सभी की भोजन आदि की पर्याप्त व्यवस्था कर रखी थी। हम अगले दिन के कार्यक्रम का पूरा आनन्द लेने के लिये शीघ्र ही सो गये। रास्ते की सारी थकान प्रातः आंख खुलते ही ओझल हो गई थी।

मुझे स्वामी सन्तोषानन्द संचालक दयानन्द मठ घण्डरां मिले। उन्होंने मुझे बताया कि योग गुरू बाबा रामदेव के गुरू और गुरूकुल कालवा के आचार्य भी आये हैं। अतः मैं आपका परिचय स्वामी बलदेव जी से कराता हूँ। ये स्वामी सदानन्द जी आश्रम में बैठे हैं। मैं अपने उपरोक्त मित्रों सहित स्वामी सन्तोषानन्द जी के पीछे चल पड़ा। उस समय स्वामी बलदेव जी गुरूकुल के आचार्य और अन्य सन्तों से बातचीत कर रहे थे। दयानन्द मठ घण्डरां के संचालक स्वामी सन्तोषानन्द जी महराज ने हमारा परिचय स्वामी बलदेव जी से कराया। हमें श्रेद्धय बलदेव के मुख पर पूर्ण तेज दिखलाई दे रहा था।

मैंने हरियाणा के इस भगवांवस्त्र धारी तेजस्वी साधु से निवेदन किया कि मैं हिमाचल स्वामी सुबोधानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य प्रतिनिधि सभा का वरिष्ठ उपाध्यक्ष हूँ। आपसे मिलने पर हमें अपार प्रसन्नता हुई है। क्या मैं कुछ प्रश्न पूछ सकता सकता हूँ ? स्वामी जी महाराज के प्रश्न पूछने अनुमति देते ही मैंने स्वामी जी के अमूल्य समय का ध्यान रखते हुये प्रश्न किया :– योग गुरू स्वामी रामदेव जी ने गुरूकुल कालवा में आपकी छत्र–छाया में कितने समय तक अध्ययन किया ? स्वामी जी : उन्होंने ४ साल तक हमारे गुरूकुल में अध्ययन किया। मेरे पूछने पर स्वामी जी ने कहा कि श्री बालकृष्ण जी भी उनके साथ आश्रम में अध्ययन करते थे।

मैंने निवेदन किया कि क्या हरियाणा के श्री रामपाल जी जो आर्य समाज और ऋषि दयानन्द पर उटपटांग व्याख्यान देते हैं, आपकी उनके साथ मुलाकात हुई है, इस सम्बन्ध में वार्तालाप हुआ ? स्वामी बलदेव जी बोले, एक नहीं अनेकों बार हम उसके पास गये और उसे शास्त्रार्थ करने का न्यौता/निमंत्रण दिया और कहा कि यदि युग पुरूष महर्षि दयानन्द पर लगाये आरोपों की सार्थकता के आपके पास प्रमाण हैं तो उन्हें भरी सभा में जनता के समक्ष रखे और उन सब की प्रमाणिकता सिद्ध करे ? कई बार उसे जेल की हवा भी खानी पड़ी। उसके अनुयायी कबीर जी को आलौकिक शक्ति जो आकाश से उतर कर आई थी मानते हैं। जिसको सृष्टि क्रम के सिद्धान्त से विपरीत होने के कारण आर्य समाज नहीं मानता।

मैंने स्वामी जी से पुनः प्रश्न किया : स्वामी जी आप एक बड़े गौ भक्त हैं। आपकी गौशाला में कितनी गाय हैं, जिनकी देख–रेख आप करते हैं ?

स्वामी जी बोले हमारी गौशाला में लगभग तीन हजार से अधिक गौयें हैं जिनका हमने पूरा प्रबन्ध कर रखा है ताकि उन्हें खाने–पीने में कोई कमी न आये। मैंने निवेदन किया कि इतनी भारी संस्था में इस गौवंश को चारा कहाँ से आता है? इस पर स्वामी जी बोले आस–पास के गांवों से गौ भक्त इसकी व्यवस्था कर देते हैं। हमारे इस कार्य से सभी गौ भक्त सहयोग करते हुये हर्ष मनाते हैं। वास्तव में गौ धन हमारे ऋषि–मुनियों, साधु–सन्तों की विशेष पूंजी रही है। गौवंश की रक्षा करना सभी देशवासियों का परम धर्म और कर्म है।

स्वामी जी के व्यस्त कार्यक्रम को देखकर हम उनके चरण स्पर्श करके वापिस पांडाल चले गये। मैं और मेरे सभी साथी योग गुरू बाबा रामदेव जी के गुरूदेव आचार्य बलदेव जी के दर्शन करके आनन्द विभोर हुये। वास्तव में आर्यजन ऐसी विभूति पर क्यों न गर्व करें जो महान् गौ भक्त और योग ऋषि बाबा रामदेव का गुरू हो ? —सम्पादक

समझो तुम संत बन गये

♦कृष्ण मोहन गोयल, अमरोहा

क्रोध में जा इच्छा में, पूरी करो। लेकिन क्रोध आने पर केवल पांच मिनट चुप रह जाओ। शांत रह जाओ। मैं तुमसे सिर्फ पांच मिनट मांग रहा है। छठवा मिनट तुम्हारा है। मुझे क्रोध के प्रारम्भिक क्षणों के सिर्फ पांच मिनट दे दो।

मैं दावा करता हूँ कि इन पांच मिनटों में क्रोध की हवा निकल जायेगी, गुस्से का दम टूट जायेगा। क्रोध की आयु बहुत अल्प है। क्रोध ज्यादा देर जीवित नहीं रहता। पांच मिनट शांत रहना सीख गये तो समझो तुम संत बन गये।

साभार : आर्य जगत

www.thearyasamaj.org

''धर्म को समझें''

♦ पं. संजय सत्यार्थी

संसार में धर्म के नाम पर भारी भ्रांति फैली हुई है। अविद्या के कारण धर्म को लोगों ने बिगाड़ कर रख दिया है। धर्म को मात्र मंदिर मस्जिद, गुरूद्वारा, चर्च आदि की परिधि में बांध दिया, जिससे धर्म संकीर्ण होकर रह गया। तथाकथित धर्म के ठेकेदारों ने धर्म के नाम पर ऐसा उधम मचाया जिससे मानवता शरमा गई। धर्म और संस्कृति पर वज्राघात हो गया। धर्म के नाम पर अधर्म का बोलबाला हो गया। इस निराशा और हताशा के वातावरण में धर्म योद्धा जगत् गुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पूना में प्रवचन देते हुए कहा था, –''परमेश्वर की आज्ञा धर्म और अवज्ञा अधर्म। विधि यह धर्म, निषेध अधर्म, न्याय धर्म, अन्याय अधर्म। सत्य धर्म असत्य अधर्म। निष्पक्षता धर्म, पक्षपात् अधर्म। इसे और स्पष्ट करते हुए ऋषि ने उद्घोष किया–''जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये एक और मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

महर्षि जी की इस परिभाषा से संसार में सुखद संदेश गया। लोग धर्म के मर्म को समझने लगे। विद्या के प्रचार से धर्म के स्वरूप को लोगों ने स्वीकारा। धर्म की परिभाषा देते हुए व्यास जी ने कहा ''आत्मनः प्रतिकूलानिपरेषां न समाचरेत'' अर्थात् जो कार्य आप को अपने लिये अच्छा न लगे उन्हें दूसरों के लिये न करो, यही धर्म सर्वस्व है। महाभारतकार ने भी कहा है–धर्मोधारयते प्रजा+'' अर्थात् धर्म ही प्रजा को धारण करता है, विनाश से बचाता है।'' इससे स्पष्ट हो जाता है कि जिन कार्यों के द्वारा तन–मन प्रसन्न रहे, बुद्धि शांत रहे तथा आत्मा आनन्दयुक्त रहे वे ही धर्म है, क्योंकि वैशेषिक दर्शन में कहा गया है– यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः सधर्म। अर्थात् जिससे इस लोक तथा मोक्ष की सिद्धि हो, वही धर्म है।''

त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम राम, द्वापर युग में योगेश्वर कृष्ण और कलियुग में आचार्य दयानन्द ने धर्म संस्थापनार्थ भागीरथ प्रयास किया था, आइये ऐसे महामानवों की प्रेरणा से धर्म को जीवन में धारण कर धर्म की रक्षा करें।

–साभार 'आर्य संकल्प'

विद्यार्थियों को प्रतिभावान कैसे बनायें ?

भोजन में परिवर्तन द्वारा विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का निखार कर सकते हैं। विद्यार्थी प्रातःकाल खाली पेट पढ़ें, तो उनको पढ़ा हुआ जल्दी याद हो जाता है। नाश्ते का त्याग विद्यार्थियों के लिए यादाश्त बढ़ाने में तथा पढ़े हुए को जल्द याद करने में सहायक है। प्रातःकाल नाश्ते के स्थान पर ताजा फलों का जूस, सूप तथा हरी पत्तियों का जूस उपयोगी है। दोपहर में हल्का भोजन, साथ में अंकुरित एवं अल्पाहार फल, सब्जी लेकर रात्रि में ही पूरा भोजन लेने से बौद्धिक विकास तेजी से होगा।

अपने से कमजोर व छोटी कक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाई में सहायता करें। अपनी पॉकेट मनी का दशांश भगवान सेवा में लगाएं। खाने से पहले खिलाना, पहनने से पहले पहनाना अर्थात् भोजन व वस्त्रों से भी सेवा करनी चाहिए।

शांत जगह पर, आसन लेकर रीढ़ की हड्डी को सीधी करके १०–२० मिनट प्रतिदिन ध्यान में बैठना चाहिए। उस समय न कुछ करें, न करने की सोचें। इससे विद्यार्थी की स्मरण शक्ति तेजी से बढ़ती है।

जो माता–पिता अपने बच्चों को पढ़ाई में अच्छा बनाना चाहते हैं, वे दूसरे के बच्चों को पढ़ाई में हर सम्भव सहयोग करें। कहावत हैं 'जैसी करनी, वैसी भरनी।'

–राजकुमार जैन, बुक बाण्ड कम्पनी, अखाड़ा बाज़ार, कुल्लू

समाचार

♦ दिनांक २६ अक्तूबर १३ को बल्ह खण्ड के पैंशनरों की मासिक बैठक खण्ड प्रधान मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में प्रातः ११ बजे शुरू हुई। इस बैठक में श्री प्रकाश चौधरी माननीय आबकारी एवं कराधान मन्त्री प्रकाश चौधरी के बड़े भाई श्री चन्द चौधरी के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया। दिवंगत श्री चन्द चौधरी की ५३ साल की आयु थी। सभी पैंशनरों ने जिला प्रधान कृष्णचन्द आर्य सहित खड़े होकर दिवंगत आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिये प्रार्थना की तथा दो मिनट का मौन रखा। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी पैंशनर श्री प्रकाश चौधरी, माननीय आबकारी और कराधान मन्त्री के गृह बग्गी में उन्हें सान्तवना देने गये। निम्नलिखित व्यक्ति सान्तवना देने के लिये गये–श्री कृष्ण चन्द आर्य, श्री मंगत राम चौधरी, लालमन शर्मा, जय राम नायक, देवी सिंह, माया राम शर्मा, सोहन लाल गुप्ता, चन्दू लाल आदि मुख्य थे।

♦ ३० अक्तूबर २०१३ को जवाहर पार्क, सुन्दरनगर में दोपहर १ बजे पैंशनर कल्याण संघ सुन्दरनगर की मासिक बैठक प्रधान श्री मोहन सिंह वर्मा की अध्यक्षता में हुई। सभी पैंशनरों ने बढ–चढ़ कर भाग लिया। यह भी निर्णय हुआ कि पैंशनरों द्वारा मुख्यमन्त्री राहत कोष में अधिकाधिक राशि एकत्रित की जाएगी।

www.thearyasamaj.org

ऋग्वेद

ओ३म्

आर्य समाज हमीरपुर का वार्षिक उत्सव

दिनांक 8 नवम्बर से 10 नवम्बर 2013 तक

यजुर्वेद

कार्यक्रम

८ नवम्बर २०१३, शुक्रवार	प्रातः हवन यज्ञ, भजन, प्रवचन	८.०० से १०.०० बजे तक
	ध्वजा रोहण	१०.०० से १०.३० बजे तक
	शोभा यात्रा	१०.०० बजे (डी. ए. वी. स्कूल हमीरपुर)
	सांय कालीन भजन, प्रवचन	७.३० से ९.३० बजे तक
९ नवम्बर २०१३, शनिवार	प्रातः हवन यज्ञ, भजन, प्रवचन	८.०० से १०.०० बजे तक दोपहर
	भजन, प्रवचन	१.०० से ५.०० बजे तक
	सांय कालीन	७.३० से ९.३० बजे तक
१० नवम्बर २०१३, रविवार	प्रातः हवन यज्ञ, भजन, प्रवचन	८.०० से १.०० बजे तक
	ऋषि लंगर	अपराह्न १.०० बजे से

इस समारोह में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती जी महाराज वैदिक प्रवक्ता श्री बिरेन्द्र शास्त्री जी सहारनपुर, भजनोपदेशक श्री कुलदीप सिंह विद्यार्थी बिजनौर एवं हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध भजनोंपदेशक श्री बीरी सिंह आर्य अपने उपदेश और मधुर संगीत की अमृत वर्षा करेंगे।

सम्पर्क सूत्र :

प्रधान, श्री सतपाल आर्य
98170-36236

मन्त्री, श्री बीरी सिंह आर्य
98053-21400

कोषाध्यक्ष, श्री अजय जगोता
94180-90772

स्थान : आर्य समाज मन्दिर, हमीरपुर

निवेदक : समस्त कार्यकारिणी, आर्य समाज, हमीरपुर

आर्य समाज मण्डी का ८४वां वार्षिक उत्सव एवं गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज मण्डी (हि. प्र.) का ८४ वाँ वार्षिक उत्सव एवं गायत्री महायज्ञ दिनांक २१ नवम्बर से २४ नवम्बर, २०१३ तक, मान्यवर इस समारोह में भारत वर्ष के प्रख्यात विद्वान आचार्य श्री शिव कुमार शास्त्री जी, श्री प्रताप सिंह आर्य भंजनोपदेशक, के प्रवचन / भजन तथा गायत्री महायज्ञ का आयोजन भी होगा।

अतः निवेदन है कि कार्यक्रमानुसार ईष्ट मित्रों तथा परिवार सहित पधार कर पुण्य के भागी बनें!

कार्यक्रम

२१ नवम्बर २०१३	गायत्री महायज्ञ भजन प्रवचन	प्रातः ७.३० से ९.३० बजे तक
	ध्वजारोहण	डॉ. माधो प्रसाद, श्री रोशन लाल बैहल द्वारा
	शोभा यात्रा	दोपहर १ से ३ बजे तक मुख्य बाजार से
२२ नवम्बर २०१३	गायत्री महायज्ञ	प्रातः ७.३० से ९.३० बजे तक
	डीएवी पाठशालाओं के बच्चों का कार्यक्रम	दोपहर २ से ४ बजे तक
	भजन प्रवचन	रात्रि ७ से ९ बजे तक
२३ नवम्बर २०१३	गायत्री महायज्ञ	प्रातः ७.३० से ९.३० बजे तक
	महिला सम्मेलन (विषय : नारी उत्थान)	दोपहर २ से ४ बजे तक
	भजन प्रवचन	रात्रि ७ से ९ बजे तक
२४ नवम्बर २०१३	गायत्री यज्ञ पूर्णाहुति, वार्षिक रिपोर्ट, भजन प्रवचन	प्रातः ९ से १२ बजे तक,
	ऋषि लंगर	१२ बजे उपरान्त

निवेदक : प्रधान एवं समस्त कार्यकारिणी के सदस्य

दूरभाष : ०१९०५-२२५९५८

सामवेद

अथर्ववेद

www.thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

दीन–दुःखियों, अपाहिजों और अनाथों को देखकर श्रीमद्दयानन्दजी क्राइस्ट बन जाते हैं। धुरन्धर के सम्मुख श्री शंकराचार्य का रूप दिखा देते हैं। एक ईश्वर का प्रचार करते और विस्तृत भ्रातृभाव की शिक्षा देते हुए भगवान् दयानन्द श्रीमान् मुहम्मदजी प्रतीत होने लगते हैं। ईश्वर का यशोगान करते हुए स्तुति–प्रार्थना में जब प्रभु दयानन्द इतने निमग्न हो जाते हैं कि उनकी आंखों से परमात्म–प्रेम की अविरल अश्रुधारा निकल आती है, गद्गद् कण्ठ और पुलकित–गात हो जाते हैं, तो सन्तवर रामदास, कबीर, नानक, दादू, चेतन और तुकाराम का समय बन्ध जाता है। वे सन्त–शिरोमणि जान पड़ते हैं। आर्यत्व की रक्षा के समय वे प्रातः स्मरणीय प्रताप, श्री शिवाजी तथा गुरु गोविन्दसिंह जी का रूप धारण कर लेते हैं।

महाराज के जीवन को जिस पक्ष से देखें, वह सर्वांग सुन्दर प्रतीत होता है। त्याग और वैराग्य की उसमें न्यूनता नहीं है। श्रद्धा और भक्ति उसमें अपार पाई जाती है। उसमें ज्ञान अगाध है। तर्क अथाह है। वह समयोचित मति का मन्दिर है। प्रेम और उपकार का पुंज है। कृपा और सहानुभूति उसमें कूट–कूटकर भरी पड़ी है। वह ओज है, तेज है, परम प्रताप है, लोक–हित है और सकल कला सम्पूर्ण है।

–स्वामी सत्यानन्द

साभार

श्री कर्मचन्द शास्त्री गांव बरल, डा. व तह. करसोग, मण्डी ने ₹ ११००, श्री किशोरी लाल गांव मच्छी भवन, डा. वासा बजीरा तह. नूरपूर, कांगड़ा ने ₹ २००, श्री एस. पी. दिवान मकान न. ६०५ न्यू शास्त्री नगर पठानकोट, पंजाब ने ₹ २००, श्री देव राज आर्य मित्र W/Z-४२८, हीरानगर, नई दिल्ली ने ₹ २००, श्री लालमन शर्मा, गांव खांदला, डा. गागल, जिला मण्डी हि. प्र. ने ₹ २००, श्री डी.सी. कपूर, मकान न. २५६/१/३ जेल रोड़ मण्डी ने ₹ १००, श्री प्रदीप कुमार, गांव वनायक डा. भोजपुर, तह. सुन्दरनगर ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

इस पत्रिका हेतु अपने ईष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी सदस्य बनायें। प्रदेश की आर्य समाजों और आप के पावन सहयोग से ही आर्य वन्दना का अंक हर मास प्रकाशित हो रहा है। हिमाचल प्रदेश की सभी आर्य समाजों का भी पत्रिका संचालन हेतु दिये जा रहे सहयोग पर साधुवाद एवं धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुन्दरनगर, (खरीहड़ी) (हि० प्र०) १७५०१६
उप–कार्यालय, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, मण्डी (हि. प्र.)

आप अपने लेख निम्न पते पर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं : arya.bandana@gmail.com

वैचारिक क्रांति के लिए महर्षि दयानन्द की अमर रचना सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।